हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार 26 जुलाई 2026

10 सांस्कृतिक टीमों ने रात जागो-देश जागो ...

11 खंड स्तरीय खेलों में शिवम स्कूल लोहानी ने मारी बाजी

खबर संक्षेप

7.25 ग्राम हेरोइन के साथ आरोपी गिरफ्तार

भिवानी। सीआईए स्टाफ-द्वितीय की टीम ने मादक पदार्थ तस्करी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार किया। एएसआई सुभाष चंद्र अपनी टीम के साथ गश्त पर थे, तभी सूचना मिली कि दिनोद रोड स्थित हनुमान मंदिर के सामने युवक हेरोइन बेचने की फिराक में खड़ा है। पुलिस ने तुरंत छापा मारकर सेवा नगर निवासी शुभम को गिरफ्तार किया। उसके कब्जे से 7.25 ग्राम हेरोइन बरामद हुई। पुलिस ने आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

गांव सेहर में मोबाइल टॉवर से बैटरी चोरी

लोहारू। उपमंडल के गांव सेहर में एक निजी कंपनी के मोबाइल नेटवर्क टॉवर से बैटरी चोरी होने का मामला सामने आया है। कंपनी के तकनीकी अधिकारी प्रवीण कुमार की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ मामला दर्ज किया है। शिकायत के अनुसार मई 2026 में टॉवर के कंट्रोल रूम से बैटरी चोरी कर ली गई थी। कंपनी स्तर पर तलाश के बाद भी सफलता नहीं मिली। अब पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

श्रीशिव महापुराण ज्ञान यज्ञ तीन अगस्त से

भिवानी। हांसी-तोशाम बाईपास स्थित बाबा भैया धाम में 3 से 11 अगस्त तक श्रीशिव महापुराण ज्ञान यज्ञ समारोह आयोजित होगा। आयोजक महंत ईश्वर गिरी महाराज ने बताया कि प्रतिदिन सुबह 11:15 से शाम 5:15 बजे तक कथा होगी। कथा वाचन अलवर के सनातन महाराज करेंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ 3 अगस्त को सुबह 5:15 बजे कलश यात्रा से होगा।

महिला आयोग की उपाध्यक्ष ने स्कूलों का किया निरीक्षण

छात्राओं की शिकायत पर तुरंत कार्रवाई करें : मीना

आंतरिक शिकायत निवारण समितियों की कार्रवाई की जानकारी ली

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

हरियाणा राज्य महिला आयोग की प्रदेश उपाध्यक्ष मीना परमार ने शनिवार को घंटाघर चौक के नजदीक और शहीद भगत सिंह चौक स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों का किया दौरा किया। इस दौरान उन्होंने स्कूलों में आंतरिक शिकायत निवारण समितियों की कार्रवाई की जानकारी ली।

शिक्षण कार्य का जायजा भी लिया: उन्होंने स्कूल प्राचार्यों को निर्देश दिए कि छात्राओं द्वारा की जाने वाली किसी भी शिकायत पर तुरंत प्रभाव से कार्रवाई करें। शिकायतों पर कार्रवाई में अनदेखी को हरियाणा महिला आयोग बर्दाश्त नहीं करेगा। इस दौरान उन्होंने कक्षाओं में जाकर शिक्षण कार्य का भी जायजा लिया।

भिवानी। स्कूल और क्लास का निरीक्षण करतीं हरियाणा राज्य महिला आयोग की प्रदेश उपाध्यक्ष मीना परमार। फोटो : हरिभूमि

लक्ष्य निर्धारित कर जीवन में आगे बढ़ें

निरीक्षण के दौरान मीना परमार ने छात्राओं से बात की और उनकी समस्याओं को जाना। उन्होंने कहा कि वे कड़ी मेहनत करें और अपना लक्ष्य निर्धारित कर जीवन में आगे बढ़ें। छात्राओं को किसी भी प्रकार से घबराने या चिंता करने की जरूरत नहीं है। हरियाणा महिला आयोग हमेशा उनके साथ में खड़ा है। छात्राओं के हितों पर कभी भी आंच नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने छात्राओं से आह्वान करते हुए कहा कि यदि उनके साथ में किसी भी स्तर पर कुछ भी गलत होता है तो वे उसका विरोध करें। उन्होंने छात्राओं से कहा उनको गुड टच और बैड टच के बारे में मालूम होना चाहिए। उन्होंने कहा कि गलत कार्य का विरोध करने में हिचकिचाहट या शर्म महसूस ना करें। वे हमेशा निडर रहें।

गलत कार्य का विरोध करने में हिचकिचाहट या शर्म महसूस ना करें

पढ़ाई में दिक्कत न आए

मीना परमार ने स्कूल प्रबंधन को निर्देश दिए कि छात्राओं को पढ़ाई में किसी प्रकार की दिक्कत नहीं आनी चाहिए। यदि आयोग के पास में किसी प्रकार की कोई शिकायत पहुंचती है तो महिला आयोग उसे पर कड़ा संज्ञान लेगा। इसके अलावा उन्होंने स्कूल परिसर में स्वच्छता का पूरा ध्यान रखने के सख्त निर्देश दिए। उन्होंने यहां पर छात्राओं के लिए बने शौचालय और पेयजल व्यवस्था का निरीक्षण किया।

भिवानी। कुलगुरु दीप्ति धर्मानी का पुतला फूंकते ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

विवि के स्थापना दिवस पर ग्रामीणों का फूटा गुस्सा

प्रेमनगर के ग्रामीणों की जमीन पर जश्न पर मना रहा सीबीएलयू, ग्रामीण झेल रहे भूखमरी व बेरोजगारी : कैप्टन कलम सिंह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

एक तरफ जहां चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय शनिवार को अपना स्थापना दिवस व जश्न मना रहा था, वहीं दूसरी तरफ गांव प्रेमनगर में सीबीएलयू के समक्ष धरने पर बैठे ग्रामीणों ने इसे काला दिवस के रूप में मनाया। अपनी मांगों को लेकर भडक़े ग्रामीणों का जन आक्रोश दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। प्रदर्शन के दौरान गुस्साए ग्रामीणों ने विश्वविद्यालय गेट पर कुलगुरु दीप्ति धर्मानी का पुतला फूंका और जमकर नारेबाजी की।

नौकरियों में आरक्षण की मांग को लेकर धरना जारी

गांव प्रेम नगर में विश्वविद्यालय में नौकरियों के आरक्षण की मांग को लेकर ग्रामीणों का अनिश्चितकालीन धरना शनिवार को भी जारी रहा। इस दौरान धरना स्थल पर बड़ी संख्या में एकत्र हुए ग्रामीणों ने विश्वविद्यालय प्रशासन के खिलाफ रोष जाहिर किया। धरने की अध्यक्षता करते हुए सोमवीर बूरा ने कहा कि आज उनकी 131 एकड़ जमीन पर विश्वविद्यालय अपना स्थापना दिवस व जश्न मना रहा है, जबकि दूसरी तरफ इस जमीन के ग्रामीण भुखमरी और बेरोजगारी झेल रहे हैं। उन्होंने ग्रामीणों से इस विरोध को एक बड़ा जन आंदोलन बनाने का आह्वान किया। धरना समिति के प्रधान कैप्टन कलम सिंह ने धरना स्थल पर मौजूद ग्रामीणों में जोश भरते हुए आंदोलन को और तेज करने की अपील की। उन्होंने कहा कि जब तक ग्रामीणों को उनका हक और नौकरियों में आरक्षण नहीं मिल जाता, तब तक यह लड़ाई मजबूती से लड़ी जाएगी।

ये रहे मौजूद : इस अवसर पर जयवीर सिंह बरवर, लीलाराम ढ़ांडा, मजे सिंह, विरेंद्र, जिले सिंह, नरेंद्र फौगाट, बिंद्र, अमित, गोविंदा, बलबीर बूरा, सोहिल, राजपाल प्रधान, अशोक, राजेश, विनोद, जुगप्रवेश, धर्मबीर, जिले सिंह, लीलू फौजी सहित अनेक ग्रामीण मौजूद रहे।

युवक के अपहरण व मारपीट मामले में दो आरोपितों को किया गिरफ्तार

चरखी दादरी। दादरी पुलिस ने युवक के अपहरण, मारपीट एवं जान से मारने की धमकी देने के मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए दो आरोपितों को गिरफ्तार किया है। नरेंद्र उर्फ मोनू निवासी सैनीपुरा, चरखी दादरी ने थाना शहर में मारपीट की शिकायत दर्ज करवाई थी। इसी मामले में जांच के दौरान पर्याप्त साक्ष्य मिलने पर शुक्रवार को राहुल तथा मनदीप उर्फ काका निवासी वाल्मीकि नगर को गिरफ्तार किया गया है।

सड़क हादसे में बहल के ट्रांसपोर्टर की मौत

बहल। बहल के ट्रांसपोर्ट व्यवसायी कमल शर्मा की शुक्रवार देर रात सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। हादसा रात करीब 1:30 बजे कैरू के पास हुआ, जब वे गुरुग्राम से अपने बेटे से मिलकर बहल लौट रहे थे। उनके साथ विनोद भी कार में मौजूद थे।

भारी वाहन के साइड दबाने पर कमल को अपनी गाड़ी सड़क किनारे उतारनी पड़ी, जिस पर गाड़ी पेड़ से टकरा गई

बताया जा रहा है कि सामने से आ रहे एक भारी वाहन के साइड दबाने पर कमल ने अपनी स्विफ्ट कार सड़क किनारे उतारी, जहां वह कीकर के पेड़ से टकरा गई। टक्कर के बाद कमल बेहोश हो गए, जबकि विनोद घायल हो गए। स्थानीय लोगों की मदद से दोनों को भिवानी अस्पताल पहुंचाया गया, जहां चिकित्सकों ने कमल को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। शनिवार सुबह घटना की सूचना फैलते ही पूरे कस्बे में शोक की लहर दौड़ गई।

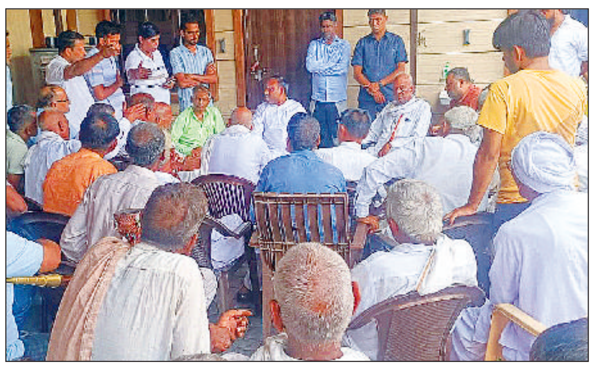

बवानीखेड़ा। विधायक कपूर वाल्मीकि लोगों की समस्याएं सुनते हुए।

विधायक कपूर सिंह ने अपने निवास पर सुनीं जन शिकायतें

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा विस क्षेत्र के विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि ने शनिवार को अपने निवास पर आयोजित जनसुनवाई के दौरान हलके के विभिन्न गांवों एवं क्षेत्रों से पहुंचे अनेकों क्षेत्रवासियों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं।

इस दौरान लोगों ने विकास कार्यों, मूलभूत सुविधाओं तथा जनहित से जुड़े विभिन्न मुद्दों को विधायक के समक्ष रखा। विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि ने प्रत्येक समस्या को गंभीरता से लेते हुए संबंधित विभागों के अधिकारियों से तुरंत संपर्क किया तथा समस्याओं के शीघ्र, प्रभावी और समयबद्ध समाधान के लिए आवश्यक निर्देश दिए। जनसुनवाई के दौरान विधायक ने कहा कि क्षेत्र की जनता का विश्वास उनकी सबसे बड़ी पूंजी है और आमजन की सुविधा, पारदर्शी प्रशासन तथा त्वरित समाधान उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना और क्षेत्र के विकास को गति देना उनका संकल्प है। क्षेत्रवासियों ने समस्याओं को गंभीरता से सुनने पर संतोष जताया।

फरार चल रहे 5 हजार के इनामी अपराधी को किया गिरफ्तार

पुलिस टीम ने आरोपी से दो देसी कट्टे व 07 जिंदा कारतूस किए बरामद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

पुलिस के सीआईए स्टाफ-द्वितीय भिवानी की टीम ने सवा साल से फरार चल रहे 5,000 के इनामी अपराधी को गिरफ्तार करने में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। फिलहाल पुलिस पूछताछ कर रही है। डीएसपी क्राइम अनूप कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि चार अप्रैल 25 को थाना तोशाम में शिकायतकर्ता सुभाष की शिकायत पर अभियोग दर्ज किया गया था। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया था कि आरोपियों ने उसके बेटे रवि तथा भाई विजेद्र के साथ मारपीट कर उन्हें गंभीर चोटें पहुंचाई थीं।

सवा साल से फरार चल रहा था बदमाश

इस मामले में पुलिस द्वारा पांच आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका था, जबकि एक आरोपी पिछले लगभग सवा साल से फरार चल रहा था। फरार आरोपी पर 5,000 का इनाम भी घोषित किया गया था। सीआईए स्टाफ-द्वितीय भिवानी के प्रभारी उप निरीक्षक दशरथ के नेतृत्व में गठित टीम ने आरोपी को तोशाम क्षेत्र से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की। गिरफ्तार आरोपी की पहचान संजय पुत्र बीर सिंह निवासी गांव दांग कला, थाना तोशाम, जिला भिवानी के रूप में हुई है। गिरफ्तारी के दौरान पुलिस टीम द्वारा आरोपी को रुकने का इशारा किया गया, लेकिन आरोपी ने अपनी मोटरसाइकिल से पुलिस कर्मचारियों एवं बैरिकेड (बैरियर गेट) में टक्कर मारकर भागने का प्रयास किया। पुलिस टीम ने तत्परता दिखाते हुए आरोपी को काबू कर लिया। तलाशी के दौरान आरोपी के कब्जे से दो देसी कट्टे एवं सात जिंदा कारतूस बरामद किए गए। इस संबंध में आरोपी के विरुद्ध थाना तोशाम में शस्त्र अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत अभियोग भी दर्ज किया गया है।

श्रीमद्भागवत कथा में भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का किया भावपूर्ण वर्णन

भगवान श्रीकृष्ण का अवतार धर्म की स्थापना के लिए हुआ: डॉ. विनय

कथा व्यास डॉ. विनय मिश्र ने भगवान श्रीकृष्ण की दिव्य बाल लीलाओं, पूतना वध, शकटासुर एवं तृणावर्त वध सहित गोकुल की विभिन्न लीलाओं का अत्यंत भावपूर्ण वर्णन किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

लिबर्टी सिनेमा रोड स्थित कुंगड़िया मंदिर में आयोजित श्रीमद्भागवत ज्ञान यज्ञ के चौथे दिन कथा व्यास डॉ विनय मिश्र ने भगवान श्रीकृष्ण की दिव्य बाल लीलाओं, पूतना वध, शकटासुर एवं तृणावर्त वध सहित गोकुल की विभिन्न लीलाओं का अत्यंत भावपूर्ण वर्णन किया। आचार्य विनय मिश्र ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण का अवतार धर्म की स्थापना, सज्जनों की रक्षा तथा दुष्टों के विनाश के लिए हुआ। उनकी प्रत्येक लीला मानव जीवन को सत्य, प्रेम, भक्ति और सदाचार का संदेश देती है।

उन्होंने कहा कि भागवत कथा केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाने वाला दिव्य ज्ञान है। जो व्यक्ति श्रद्धा और विश्वास के साथ भागवत कथा का श्रवण करता है, उसके जीवन के कष्ट दूर होते हैं तथा मन में शांति और भगवान के प्रति अटूट भक्ति का भाव जागृत होता है। कथा के दौरान भजनों और संकीर्तन से पूरा पांडाल भक्तिमय वातावरण में सराबोर रहा। श्रद्धालु भगवान श्रीकृष्ण के जयकारों के साथ भक्ति रस में डूबे रहे। कथा के उपरांत श्रद्धालुओं ने आरती में भाग लिया तथा प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर विश्व हिंदू पीठ के अध्यक्ष आचार्य मदन ने कहा कि सनातन धर्म के प्रचार प्रसार के लिए जितना कार्य किया जाए वह कम है क्योंकि सनातन धर्म से ही हमारे जीवन में शुद्धता,सफलता और शांति प्राप्त हो सकती है।

सनातन धर्म का प्रचार करें

हिंदू सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु गुप्ता ने कहा कि हम सबको हिंदू धर्म के लिए कार्य करना चाहिए हिंदू धर्म के विस्तार के लिए अधिक से अधिक सनातन धर्म का प्रचार करना चाहिए। आयोजकों ने बताया कि श्रीमद्भागवत कथा प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक आयोजित की जा रही है तथा क्षेत्र के श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित हो रहे हैं।

देशव्यापी छात्र आन्दोलन के समर्थन में जनसंगठनों ने की सांस्कृतिक सभा

सांस्कृतिक टीमों ने रात जागो-देश जागो कार्यक्रम में शिक्षा बचाने पर किया कटाक्ष

अमर शहीद मदनलाल ढींगड़ा की शहादत को याद किया

■ जनसंगठनों ने देशभक्ति व क्रातिकारी गीतों से समां बांधा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भिवानी। शहीद मदनलाल ढींगड़ा स्मारक पर छात्र आंदोलन के समर्थन में सांस्कृतिक सभा करते जनसंगठन। फोटो : हरिभूमि

विभिन्न जनसंगठनों की ओर से देशव्यापी शिक्षा बचाओ छात्र युवा आन्दोलन के समर्थन में शहीद मदनलाल धींगड़ा स्मारक स्थल पर रात जागो देश जागो कार्यक्रम के तहत शुक्रवार की रात को सभा की तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता एसएफआई से छात्र अरुण कुमार, सर्व कर्मचारी संघ से सुरजभान जटासरा, किसान सभा से सन्तोष देशवाल, सीटू से सुशीला, जनवादी महिला समिति से अनुराधा, ज्ञान विज्ञान समिति से जगदीश सिंह, रिटायर्ड कर्मचारी संघ से नरेश शर्मा, युवा कल्याण संगठन से कमल सिंह प्रधान,जनसंघर्ष समिति से सज्जन कुमार सिंगला व दलित अधिकार मंच से सुखदेव पालुवास ने संयुक्त रूप से की। मंच संचालन सर्व कर्मचारी संघ के जिला प्रधान सुमेर आर्य ने किया। कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए अमर शहीद मदनलाल ढींगड़ा की शहादत को याद किया तथा उनकी आदमकद प्रतिमा पर मालार्पण किया। संगठनों ने सांस्कृतिक गीतों के माध्यम से शिक्षा बचाने पर कटाक्ष और छात्र आंदोलन का समर्थन किया। रात जागो व देश जागो कार्यक्रम में जयपाल साहू सांस्कृतिक टीम के वर्तमान छात्र आंदोलन व देशभक्ति क्रातिकारी गीतों का श्रोताओं में समां बांध दिया और श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गए। इस अवसर पर रिटायर्ड कर्मचारी संघ के राष्ट्रीय महासचिव मास्टर वजीर सिंह, किसान सभा के जिला उपाध्यक्ष कामरेड ओमप्रकाश व युवा कल्याण संगठन के संरक्षक कमल प्रधान ने कहा कि छात्रों व युवाओं का देशव्यापी आंदोलन मुद्दा आधारित है और आंदोलन का नेतृत्व व्यक्ति नहीं मुद्दा कर रहा है।

देशव्यापी आन्दोलन के दबाव में केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री को पेपर लीक जवाबदेही के तौर पर अपने पद से हर हालत में इस्तीफा देना ही होगा। उन्होंने कहा कि जब तक वर्तमान छात्र आन्दोलन की सभी पांचों मांगे लागू नहीं होगी, तब तक हमारे सभी जनसंगठन जन्तर मन्तर पर शुरू किए छात्र आंदोलन के समर्थन में इसी तरह आन्दोलन करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि छात्रों की मांगे केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री के इस्तीके के साथ, आत्म हत्या करने पर मजबूर होने वाले प्रत्येक परिवार को एक एक करोड़ रुपये मुआवजा, सभी छात्रों पर दर्ज मुकदमें वापस व रिहाई, पेपर लीक करने वालों की उच्च स्तरीय न्यायिक जांच की मांग की।

शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा देर से उठाया गया कदम, दोषियों पर हो कड़ी कार्रवाई : कृष्ण वर्मा

देश के लाखों छात्रों और युवाओं का अटूट संघर्ष लाया रंग

भिवानी। जननायक जनता पार्टी जिला अध्यक्ष पिछड़ा वर्ग भिवानी कृष्ण वर्मा ने कहा कि देशभर में भारी आक्रोश के बाद शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा सरकार द्वारा बहुत देर से उठाया गया कदम है। उन्होंने कहा कि यह इस्तीफा किसी एक व्यक्ति के पद त्याग तक सीमित नहीं है, बल्कि देश के लाखों छात्रों और युवाओं के अटूट संघर्ष, संयम और लोकतांत्रिक दबाव की जीत है। उन्होंने कहा कि केवल इस्तीफे से लड़ाई खत्म नहीं होती। भविष्य में ऐसी दुखद घटनाओं और परीक्षा संबंधी धांधलियों की पुनरावृत्ति न हो, इसके लिए भर्ती एवं परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता सुनिश्चित करने वाले कड़े कानून बनाए जाएं और पूरी व्यवस्था में व्यापक सुधार किया जाए। कृष्ण वर्मा ने कहा कि जेजेपी युवा प्रदेश अध्यक्ष दिग्विजय सिंह चौटाला और जननायक जनता पार्टी ने छात्रों की इस लड़ाई में शुरू से ही बढ़-चढ़कर भाग लिया है। पार्टी ने लगातार छात्रों की आवाज को मजबूती से उठाया और उनके न्याय के संघर्ष में उनके साथ खड़ी रही। जेजेपी नेता ने जोर देकर कहा कि पूरे घटनाक्रम की उच्चस्तरीय एवं निष्पक्ष जांच कराई जानी चाहिए। जो भी प्रशासनिक या राजनीतिक लोग इस मामले में जिम्मेदार पाए जाएं, उनके खिलाफ कानून के तहत कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए। कृष्ण वर्मा ने कहा कि युवाओं का भविष्य देश की सबसे बड़ी पूंजी है। सरकार को छात्रों की आवाज दबाने के बजाय उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुनना चाहिए और ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित करनी चाहिए, जिसमें हर विद्यार्थी को निष्पक्ष परीक्षा, पारदर्शी भर्ती और न्यायपूर्ण अवसर मिल सके।

चरखी दादरी। किला मैदान में धरने को संबोधित करते राव नरेंद्र सिंह।

युवाओं के भविष्य से नहीं होने देंगे खिलवाड़ : राव नरेंद्र सिंह

हरिभूमि न्यूज ▶▶ चरखी दादरी

प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने कहा कि राहुल गांधी समेत आईएनडीआईए गठबंधन के सभी नेता एकजुटता के साथ युवाओं के अधिकारों की लड़ाई में उनके साथ खड़े हैं और भविष्य के साथ खिलवाड़ नहीं होने देंगे।

राव नरेंद्र सिंह ने यह बात स्थानीय किला मैदान में चल रहे धरने को शनिवार को समर्थन देते हुए अपने संबोधन में कही। इससे पहले उन्होंने आंबेडकर चौक पर डॉ. भीमराव आंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित किए। इसके बाद कार्यकर्ताओं के साथ पैदल मार्च करते हुए राव नरेंद्र सिंह धरना स्थल पर पहुंचे। राव नरेंद्र सिंह ने कहा कि पुलिस ने बर्बरता की सभी हदें पार कर दी और अपनी जायज मांगों को लेकर प्रदर्शन कर रहे बच्चों पर बेरहमी से लाठीचार्ज करने के साथ आंसु गैस के गोले दागे। उन्होंने कहा कि युवाओं की आवाज उठाने वाले लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और विपक्ष के अन्य नेताओं को भी बलपूर्वक बंधक बनाया गया।

पेपर लीक के खिलाफ छात्रों के संघर्ष की जीत का स्वागत

बाढड़ा। सेंटर ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन्स (सीटू) के जिला सहसंयोजक सुमेर सिंह ने पेपर लीक के खिलाफ देशभर में छात्रों और युवाओं द्वारा चलाए गए आंदोलन को लोकतांत्रिक संघर्ष की बड़ी जीत बताते हुए इसका स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि इस आंदोलन ने शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त अनियमितताओं और भ्रष्टाचार के खिलाफ मजबूत संदेश दिया है। सुमेर सिंह ने कहा कि पेपर लीक की घटनाओं ने लाखों छात्रों और युवाओं के भविष्य को प्रभावित किया है। परीक्षा की तैयारी में वर्षों की मेहनत करने वाले अभ्यर्थियों और उनके परिवारों को मानसिक, आर्थिक और सामाजिक परेशानियों का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद छात्रों ने लाठीचार्ज, दमन और प्रशासनिक दबाव के बीच भी शांतिपूर्ण ढंग से अपना संघर्ष जारी रखा। उन्होंने कहा कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा छात्रों के संघर्ष का पहला परिणाम है, लेकिन केवल इस्तीफा पर्याप्त नहीं है। उन्होंने मांग की कि परीक्षा संबंधी अनियमितताओं के लिए जि मेदार नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) को भंग कर परीक्षा प्रणाली का विकेंद्रीकरण किया जाए तथा इसे अधिक पारदर्शी, निष्पक्ष और जवाबदेह बनाया जाए। सीटू नेता ने आरोप लगाया कि शिक्षा के बढ़ते व्यावसायीकरण और केंद्रीकरण का सबसे अधिक असर गरीब, मजदूर और किसान परिवारों के बच्चों पर पड़ रहा है। उन्होंने सभी के लिए समान, वैज्ञानिक और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया।
सुमेर सिंह ने कहा कि पेपर लीक, शिक्षा में भ्रष्टाचार और युवाओं के भविष्य से जुड़े मुद्दों पर सीटू छात्र-युवा आंदोलन के साथ मजबूती से खड़ी है।

सीजेपी के छात्रों की हुई जीत, बहुत पहले होना चाहिए था शिक्षामंत्री का इस्तीफा : ईश्वर

भिवानी। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा छात्रों के संघर्ष की जीत है, इस आंदोलन में कांग्रेस पार्टी हर प्रकार के छात्रों के साथ खड़ी रही और आगे भी छात्रों के हकों के लिए लड़ती रहेगी, उक्त व्यक्तत्व जिला कांग्रेस शहरी कमेटी के उपाध्यक्ष एवं कर्मचारी नेता ईश्वर शर्मा प्रधान ने कहे। शर्मा ने कहा कि नीट पेपर रद्द होने पर दिल्ली के जंतर-मंतर पर आंदोलन कर रहे सीजेपी के छात्रों के संघर्ष के आगे केन्द्रीय शिक्षामंत्री धर्मेंद्र प्रधान को झुकना पड़ा और इस्तीफा देना पड़ा। उन्होंने कहा कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा बहुत पहले हो जाना चाहिए था, ताकि छात्रों को आंदोलन करने की जरूरत नहीं पड़ती। उन्होंने केन्द्र सरकार से मांग की कि नीट परीक्षा पेपर रद्द होने से हताश होकर आत्महत्या करने वाले छात्रों व आंदोलन में शहीद होने वाले छात्रों के परिजनों को एक-एक करोड़ रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान करें तथा उनके परिजनों को सरकारी नौकरी प्रदान करें। उन्होंने कहा कि भाजपा की जनविरोधी नीतियों से प्रदेश व देश का हर वर्ग परेशान है, आने वाला समय कांग्रेस पार्टी का है।

पेंशनरों की बेसिक पेंशन में 5, 10 और 15 प्रतिशत बढ़ोतरी की मांग

चरखी दादरी। ऑल रिटायर्ड कर्मचारी वेलफेयर एसोसिएशन जिला चरखी दादरी की बैठक शनिवार को स्थानीय रोज गार्डन में आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता जिला प्रधान होशियार सिंह सोनी और महिला प्रधान संतरा डबास ने की, जबकि स्टेट कार्यकारिणी सदस्य शकुंतला श्योराण मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। बैठक में सेवानिवृत्त कर्मचारियों की विभिन्न मांगों और संगठनात्मक मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। प्रेस प्रवक्ता छतर सिंह छिल्लर ने बताया कि दिल्ली के जंतर-मंतर पर चल रहे धरने तथा दादरी के किला मैदान में जारी धरने को एसोसिएशन ने पूर्ण समर्थन देने का निर्णय लिया। उन्होंने बताया कि 26 जुलाई को जिले के सेवानिवृत्त कर्मचारी बड़ी संख्या में दिल्ली पहुंचकर जंतर-मंतर पर आयोजित धरने में भाग लेंगे। बैठक के दौरान ईश्वर छिल्लर ने 65, 70 और 75 वर्ष की आयु पूरी करने वाले पेंशनरों की बेसिक पेंशन में क्रमशः 5, 10 और 15 प्रतिशत बढ़ोतरी की मांग उठाई। विजय अहलावत ने मेडिकल कैशलेस सुविधा लागू करने और मेडिकल भत्ता तीन हजार रुपये प्रतिमाह किए जाने का प्रस्ताव रखा। शकुंतला श्योराण ने विधवा एलटीसी और पुरानी एलटीसी सुविधा बहाल करने की मांग रखी, जबकि रामेश्वर मोरवाला ने कोरोना काल के बकाया डीए का शीघ्र भुगतान करने की आवश्यकता पर जोर दिया। बैठक में इन मांगों को सरकार के समक्ष प्रभावी ढंग से उठाने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर कांता देवी, प्रेम कौर, भरपाई, रविंद्रा कुमारी, रामौतार झोझू, पवन कुमार, रामकिशन, देवा, बलबीर आदि भी मौजूद रहे।

धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा, सीजेपी छात्रों के संघर्ष की जीत: जितेंद्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

■ भाजपा को अपनी नीतियों में सुधार करने की जरूरत : भोलू

छात्रों के कारण ही भाजपा सत्ता में आई थी, अगर वे किसी पार्टी को सत्ता में ला सकते हैं तो उखाड़ फेंकने का दम भी रखते हैं, ये बात छात्र संघर्ष समिति के सदस्य एवं पूर्व छात्र नेता जितेन्द्र भोलू ने केंद्रीय शिक्षामंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे पर कही। भोलू ने कहा कि धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा पिछले रद्द हुए नीट पेपर को लेकर लगभग 26 दिनों से दिल्ली जंतर-मंतर पर आंदोलन कर रहे सीजेपी छात्रों के संघर्ष की जीत है। भोलू ने कहा कि भारत देश में आजादी के बाद भाजपा की जनविरोधी नीतियों के कारण छात्रों ने शिक्षा व्यवस्था में सुधार को लेकर पहली बार इतना बड़ा जनआंदोलन करना पड़ा, जिससे ये साबित होता है कि भाजपा सरकार हर मोर्चे पर फेल है, वह केवल अपने फायदे के लिए कार्य कर रही है, जिसका खामियाजा आमजन को भुगतना पड़ रहा है। उन्होंने सरकार से मांग की कि वे शिक्षा व स्वास्थ्य प्रणाली में सुधार के साथ-साथ भाजपा को अपनी नीतियों में भी सुधार करने की जरूरत है। अगर समय रहते उन्होंने अपनी नीतियों में सुधार नहीं किया तो देश व प्रदेश की जनता आने वाले लोकसभा व विधानसभा चुनाव में सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाने का काम करेगी।

भिवानी के नौ 'रत्नों' को मिलेगा बीपीएमएस का 'नवरत्न अवार्ड 2026'

भिवानी। निःशुल्क समाजसेवा, स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के साथ सनातनी मूल्यों की प्रबल प्रचारक संस्था भिवानी परिवार मैत्री संघ (बीपीएमएस) भिवानी जिले के उन दिग्गज, विलक्षण सितारों को सम्मान देने जा रही है, जिन्होंने अपनी प्रतिभा और कड़ी मेहनत से विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण सफलता प्राप्त कर भिवानी का नाम देश-दुनिया में चमकाया है। मैत्री संघ के अध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवि और दिग्गज एंकर राजेश चेतन ने बताया कि रविवार 26 जुलाई को दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र स्थित होटल क्राउन प्लाजा में दिव्य एवं विराट 'भिवानी नवरत्न अवाड्र्स 2026' कार्यक्रम का आयोजन होगा, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में कीर्ति की चमक बिखेरने वाले भिवानी जिले के नौ 'रत्नों' को सम्मानित किया जाएगा। राजेश ने बताया कि नवरत्नों में बीआर एग्रोटेक लिमिटेड सिवानी-दिल्ली के डायरेक्टर कृष्ण कुमार गुप्ता,जीएसआई एंटरप्राइजेज प्राइवेट लिमिटेड भिवानी-दिल्ली के चेयरमैन कुलदीप कुमार अग्रवाल, लिटिल हार्ट ग्रुप आफ इंस्टीट्यूशंस भिवानी के मैनेजिंग डायरेक्टर पवन गोयल, गोयल लाइम इंडस्ट्रीज लिमिटेड तोशाम-दिल्ली के फाऊंडर राजीव तोशामवाल, एसएलआर मेटालिक्स लिमिटेड चरखी दादरी-गुरुग्राम के मैनेजिंग डायरेक्टर राजकुमार गोयल, एरेक्रुत एचआर ऑटोमेशन सोल्यूशन्स प्राइवेट लिमिटेड भिवानी-दिल्ली के को-फाउंडर डॉ. रविन्द्र गोयल, एलआरबी ग्रुप लोहारू-यमुनानगर के डायरेक्टर उमेश सिंघल, सेंटीलियन कैपिटल प्राइवेट लिमिटेड जुई-दिल्ली के डायरेक्टर विनोद अग्रवाल, शांति फर्टिलाइजर्स एंड कैमिकल्स भिवानी-हिसार के चेयरमैन विनोद तायल के नाम बीपीएमएस के नवरत्न अवार्ड के लिए चयनित विशिष्ट हस्तियों की सूची में शामिल हैं।

शामलात पर बने मकानों के नियमितीकरण के लिए करें ऑनलाइन आवेदन

भिवानी। एडीसी दीपक बाबू लाल करवा ने बताया कि विकास एवं पंचायत विभाग द्वारा शामलात भूमि पर 31 मार्च 2004 अथवा उससे पूर्व निर्मित अनाधिकृत आवासीय मकानों के नियमितीकरण एवं पंजीकरण के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। विभाग द्वारा इसके लिए समाधान पोर्टल शुरू किया गया है, जिस पर पात्र कब्जाधारक स्वयं आवेदन कर सकते हैं। श्री करवा ने बताया कि विकास एवं पंचायत विभाग द्वारा उपलब्ध करवाई गई जानकारी के अनुसार शामलात भूमि पर 31 मार्च 2004 अथवा उससे पूर्व निर्मित अनाधिकृत आवासीय मकानों के नियमितीकरण एवं पंजीकरण के लिए समय-सीमा निर्धारित की गई है। अनाधिकृत कब्जाधारक, जो अपनी आवासीय भूमि का नियमितीकरण अथवा पंजीकरण करवाना चाहते हैं, वे समाधान पोर्टल के माध्यम से स्वयं ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि आवेदन के लिए निर्धारित पात्रता शर्तों के अनुसार आवासीय मकान का निर्माण 31 मार्च 2004 अथवा उससे पूर्व किया गया हो।

बहल डिस्ट्रीब्यूटरी में पानी छोड़ा नहीं सूखे रहेंगे लोगों के हलक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहल

दो महीने के लम्बे इंतजार के बाद आखिर नहर विभाग ने बहल क्षेत्र के लोगों की सुध ले ली है। शुक्रवार को नहर विभाग ने बहल डिस्ट्रीब्यूटरी में पानी छोड़ा है जिससे लंबे समय से नहरी पानी की बाट जोह रहे लोगों को राहत मिलेगी। शुक्रवार और शनिवार को नहर में चले पानी से गांवों के जलघरों में बने टैंक पानी से भर गए है। मंत्री राजेश नागर ने शिकायतकर्ता को आश्वासन दिया था कि यह गंभीर समस्या है और उनका प्रयास रहेगा कि अगले दो दिनों में नहरों में पानी आए और बहल क्षेत्र के सभी जलघरों के टैंकों तक पानी पहुंचे। क्षेत्र की इस समस्या को समाचार पत्रों ने भी प्रमुखता से प्रकाशित किया था। मंत्री के आदेश और अखबार में उजागर समस्या पर नहर विभाग शुक्रवार को जाग गया। शुक्रवार और शनिवार को नहर में पानी पहुंच गया और बहल से जुड़े गांवों के जलघरों ने पेयजल किए पानी की व्यवस्था हो गई। समाजसेवी महावीर चहल ने टैंकों में पानी आने पर मंत्री राजेश नागर और मीडिया का आभार जताया और कहा कि गर्मी के मौसम में नहर विभाग ने दो महीने तक पानी नहीं छोड़ा जिससे लोगों को पेयजल को लेकर भारी परेशानी हुई। उन्होंने इस बात की जांच की भी मांग की कि जब पीछे से नहर में पानी की पूरी व्यवस्था थी तो आगे पानी क्यों नहीं छोड़ा गया। उन्होंने मांग की इस अव्यवस्था के लिए जो भी जिम्मेवार अधिकारी है, उसके खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए। सिंचाई विभाग की लापरवाही से बहल क्षेत्र के लोगों को गर्मी के मौसम में पेयजल संकट झेलना पड़ा है। वे आभारी है मंत्री राजेश नागर के जिन्होंने उनकी सुनी और नहरों में पानी आया।

मासिक बैठक में उठाया मुद्दा

मंगलवार को बहल क्षेत्र के गांवों में बने पेयजल समस्या को गोकलपुरा के समाजसेवी महावीर चहल ने जिला कष्ट निवारण समिति की मासिक बैठक में जोरशोर से उठाया था। चहल ने बैठकमें मंत्री राजेश नागर के समक्ष जलघरों के सूखे टैंकों की फोटो दिखाई और बताया कि पिछले दो महीने से बहल के लोग पानी की बूंद बूंद को तरस रहे है। जबकि, आपकी सरकार के मंत्री नहरों में पर्याप्त पानी होने का दावा कर रहे हैं।

समीक्षा बैठक में लंबित मामलों के शीघ्र निस्तारण के दिए निर्देश: एडीसी

भिवानी। लघु सचिवालय स्थित डीआरडीए सभागार में अतिरिक्त उपायुक्त (एडीसी) दीपक बाबूलाल कारवा की अध्यक्षता में जिला स्तरीय क्लीयरेंस कमेटी (डीएलसीसी) की त्रैमासिक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न विभागों से संबंधित लंबित मामलों की विस्तार से समीक्षा करते हुए अधिकारियों को समयबद्ध ढंग से सभी मामलों का निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

बैठक में एडीसी ने विभिन्न विभागों के कुल 25 आवेदनों पर विचार किया। इनमें से तीन मामलों को स्वीकृति प्रदान की गई, जबकि तीन मामलों को निर्धारित मानकों के अनुरूप न पाए जाने पर अस्वीकृत कर दिया गया। शेष 19 लंबित मामलों पर विस्तार से चर्चा की गई। इनमें मुख्य रूप से हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम, खान एवं भू-विज्ञान सहित अन्य विभागों से संबंधित मामलों की समीक्षा की गई तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई शीघ्र पूरी करने के निर्देश दिए गए। बैठक के दौरान मोबाइल टावरों से संबंधित 11 मामलों पर चर्चा हुई, जिन्हें संतोषजनक पाया गया।

चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय ने अपना 13वां स्थापना दिवस मनाया

भिवानी। चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय का `तेरहवां स्थापना दिवस आज प्रेमनगर स्थित नए परिसर में स्वामी डॉ. सदानंद महाराज के परम सानिध्य में बड़े हर्षोल्लास एवं गर्व के साथ मनाया गया। इस अवसर पर खेल एवं युवा सांस्कृतिक गतिविधियों का पुरस्कार वितरण समारोह और वीर माता जीजाबाई सम्मान समारोह का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ हवन यज्ञ के साथ हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. दीप्ति धर्माणी ने की। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि सीआरएसयू जींद के कुलगुरु प्रो. रामपाल सैनी ने शिरकत की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलसचिव प्रो. भावना शर्मा सहित सभी डीन, विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, विद्यार्थी एवं गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। कुलगुरु प्रो. दीप्ति धर्माणी ने कहा कि आज विज्ञान का युग है, हमें आगे बढ़ना है, लेकिन अपनी जड़ों से जुड़े रहकर ही आगे बढ़ा जा सकता है। हमें अपनी पुरातन संस्कृति एवं ज्ञान संपदा से आधुनिक विकास को जोड़ना होगा। हमने विकसित भारत 2047 के संकल्प को सिद्धि तक लेकर जाना है। उन्होंने कर्मचारियों को 13वें स्थापना दिवस की बधाई देते हुए सच्चाई, ईमानदारी, कड़ी मेहनत और लगन से विश्वविद्यालय की विकास यात्रा के सहभागी बनने का आह्वान किया।

अभियान चला बापोड़ा, कोंट, कालुवास, पुर्णपुरा, खरक, बामला व कायला में लगाए पौधे

जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग का पौधरोपण अभियान का आगाज, 3100 पौधे लगाने का लक्ष्य

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

पौधरोपण आने वाली पीढ़ियों के लिए सिद्ध होगा सबसे बड़ा उपहार : जेई जावला

भिवानी। पौधरोपण करते जनस्वास्थ्य विभाग के जेई बिजेश जावला व अन्य।

आप खुलकर सांस लेना चाहते हैं, तो एक पौधा अवश्य लगाएं, इसी सकारात्मक और दूरदर्शी सोच के साथ जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग भिवानी द्वारा जिले को हरा-भरा और प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए पौधरोपण अभियान चलाया जा रहा है। 15 जुलाई से शुरू जन-कल्याणकारी अभियान 31 अगस्त तक निरंतर जारी रहेगा। अभियान के तहत जनस्वास्थ्य विभाग के उपमंडल नंबर 3 और 4 के अंतर्गत विभिन्न ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में पर्यावरण संतुलन और जल संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 3100 पौधें लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। विभाग द्वारा इस हरित संकल्प को धरातल पर उतारते हुए तेजी से कार्य किया जा रहा है।

अभियान के तहत बापोड़ा, कोंट, कालुवास, पुर्णपुरा, खरक, बामला व कायला जैसे विभिन्न गांवों में पौधरोपण का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किया। इन स्थानों पर स्थानीय प्रशासनिक सहयोग के साथ-साथ जनभागीदारी भी देखने को मिल रही है। विभाग की पहल पर जानकारी सांझा करते हुए कनिष्ठ अभियंता बिजेश जावला ने कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि हम सभी का नैतिक दायित्व है, आज जिस तरह से जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण की समस्याएं बढ़ रही हैं, पौधरोपण ही हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए सबसे बड़ा उपहार सिद्ध होगा। जावला ने बताया कि जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग भिवानी के उपमंडल 3 और 4 के अंतर्गत हमारा लक्ष्य 3100 पौधें लगाने का है, जिसे हम समय सीमा के भीतर पूरा करने के लिए कटिबद्ध हैं। बापोड़ा, कोंट, कालुवास, पुर्णपुरा, खरक, बामला व कायला जैसे क्षेत्रों में पौधें लगाए जा चुके हैं और ये प्रक्रिया लगातार जारी है। जेई जावला ने कहा कि अभियान केवल पौधे लगाने तक सीमित नहीं है, बल्कि उनकी निरंतर देखभाल और सुरक्षा सुनिश्चित करना भी हमारी प्राथमिकता है।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर सरपंच नरेश गौतम, रामधारी शर्मा, सुरेंद्र पंच, शशि शर्मा, संदीप कर्मचारी, सत्यवान कर्मचारी, कमल शर्मा, विजय शर्मा कर्मचारी, धर्मेंद्र शर्मा पंच, सोनू तंवर, पवन, संजय, पुष्कर शर्मा आदि मौजूद रहे।

पेपर लीक बिल को केंद्रीय मंत्रिमंडल से मंजूरी सराहनीय कदम:राजेश

भिवानी। भाजपा व्यवसायिक प्रकोष्ठ एवं लघु उद्योग के जिला प्रभारी राजेश सांकरोडिया ने केंद्र सरकार द्वारा संशोधित पेपर लीक बिल को केंद्रीय मंत्रिमंडल से मंजूरी मिलने का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार युवाओं के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने बताया कि संशोधित बिल में पेपर लीक जैसे गंभीर अपराधों के लिए 10 वर्ष तक की कैद और 10 करोड़ रुपए तक के जुर्माने का प्रावधान है। उन्होंने कहा कि यह प्रावधान परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता लाएगा और नकल व पेपर लीक माफिया पर प्रभावी अंकुश लगाएगा। केंद्र सरकार का यह निर्णय लाखों मेहनती छात्रों के हित में है। सांकरोडिया के अनुसार, जो छात्र वर्षों की मेहनत से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं, उनके साथ अन्याय करने वालों के खिलाफ अब कठोर कार्रवाई सुनिश्चित होगी।

श्रीमती उत्तमी बाई स्कूल में सीए फाउंडेशन की निःशुल्क कोचिंग शुरू

भिवानी। श्रीमती उत्तमी बाई आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में सी.ए फाउंडेशन की कोचिंग निःशुल्क कक्षाएं प्रारंभ करने हेतु अभिभावकों को आमंत्रित किया गया। बैठक का उद्देश्य कॉमर्स शिक्षा को अधिक प्रभावी, सुलभ एवं रोजगारोन्मुख बनाना तथा अधिक से अधिक छात्राओं को इस विषय से जोड़ने का सुझाव प्राप्त करना था। बैठक में कोचिंग से जुड़े पारस इंस्टीटयूट ऑफ कॉमर्स हिसार के निदेशक सुरेन्द्र शर्मा, विवेक मनोचा, भिवानी ब्रांच के इंचार्ज चन्द्रशेखर, प्रबंधकारिणी समिति के सदस्य सेवानिवृत डी.ई.ओ सुरेश शर्मा, एडवोकेट मुकेश रहेजा उपस्थित रहे। सुरेन्द्र शर्मा ने अभिभावकों व छात्राओं को सी.ए फाउंडेशन पाठयक्रम, करियर के अवसरों और कोचिंग के बारे में जानकारी प्रदान की। विवेक ने बताया कि कॉमर्स स्ट्रीम के विद्यार्थी केवल अकाउंटेंट ही नहीं बनते बल्कि वित्त बैंकिंग, प्रबंधन, कानून, उद्यमिता और सरकारी सेवाओं सहित अनेक क्षेत्रों में अपना करियर बना सकते हैं। सुरेश शर्मा ने अभिभावकों को संबोधित करते हुए बताया कि कॉमर्स एक ऐसा विषय है जो विद्यार्थियों को नौकरी, व्यवसाय, प्रोफेशनल कोर्स और सरकारी सेवाओं में उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है। मुकेश रहेजा ने बताया कि रूचि के अनुसार सही कौशल और उच्च शिक्षा चुने तो वे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफल करियर बना सकते हैं। बैठक में अभिभावकों के प्रश्नों का समाधान सहज एवं स्पष्ट शब्दों में किया गया साथ ही परीक्षा पैटर्न और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के तरीकों की विस्तृत जानकारी दी।

खबर संक्षेप

प्राचार्य पद पर दिनेश कुमार ने संभाली कमान

बवानीखेड़ा। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में लंबे समय से रिक्त चल रहे प्राचार्य पद पर पदोन्नति प्राप्त कर दिनेश कुमार ने कार्यभार ग्रहण कर लिया है। उनके पदभार संभालने पर विद्यालय स्टाफ द्वारा स्वागत एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। प्राचार्य दिनेश कुमार ने बताया कि उन्होंने 4 नवंबर 2008 को रावमावि, खंरक कला में पीजीटी (भूगोल) के पद पर अपनी सेवाएं शुरू की थीं।

ट्रस्ट के प्रतिनिधिमंडल ने मंत्री से की मुलाकात

बवानीखेड़ा। दक्ष प्रजापति चेरिटेबल ट्रस्ट के नवनियुक्त प्रधान जोगीराम नाहड़िया के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने चंडीगढ़ में पीडब्ल्यूडी एवं पब्लिक हेल्थ मंत्री रणबीर गंगवा से शिष्टाचार भेंट की।

सत्यनारायण ने संभाला थाना प्रभारी का कार्यभार

लोहारू। जिला पुलिस अनुसंधान विंग से स्थानांतरित होकर लोहारू पहुंचे पुलिस अधिकारी सत्यनारायण ने लोहारू थाना प्रभारी का कार्यभार संभाल लिया है। नए थाना प्रभारी ने कहा कि स्कूल, कॉलेज शिक्षण संस्थानों के बाहर किसी प्रकार की आवारागर्दी सहन नहीं की जाएगी। मनचले युवकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि नशे का अवैध कारोबार करने वालों के साथ सख्ती से निपटा जाएगा

सूचना

मै रजत पुत्र श्री अनिल निवासी वार्ड नम्बर 14 हीरो की गली, बीरवान पाना भिवानी तहसील व जिला भिवानी ब्यान करता हैं कि दिनांक 17.11.2024 को मेरी पत्नी मीना ने कदम हास्पीटलॅ भिवानी में मेरी बेटी को जन्म दिया था जिसका नाम बानी / Bani है लेकिन कार्यालय रजिस्ट्रार (जन्म एवं मृत्यु) नगर पालिका भिवानी मे मेरी बेटी के जन्म तिथि रिकार्ड पर्जीकरण सख्यां B202406901200007137 में मेरी बेटी का नाम भानी/ Bhani गलत दर्ज हो गया है जिसको दुरूस्त करते हुए मेरी बेटी का नाम बानी / Bcni समझा व दर्ज किया जावें।

खिलाड़ियों ने चेस, जैवलिन थ्रो, दौड़ और कुश्ती में दिखाए जौहर

खंड स्तरीय खेलों में शिवम स्कूल लोहानी ने मारी बाजी

खंड शिक्षा अधिकारी महेंद्र सिंह गिल की अध्यक्षता में विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

गुरुवार को खंड कैरू में शिक्षा विभाग की ओर से खंड शिक्षा अधिकारी महेंद्र सिंह गिल की अध्यक्षता में विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया। जिसमें कैरू खंड के सभी राजकीय/ अराजकीय स्कूलों ने भाग लिया। इन खेलों में नोडल अधिकारी सोमदत्त शर्मा, सह नोडल अधिकारी विनोद मान, तकनीकी अधिकारी बलवान सिंह डी पी, प्राचार्य मदन सिंह तंवर कैरू, सतपाल सिंह जुई, सुंदर सिंह कुसुंभी के मार्गदर्शन में खेल संपन्न हुए।

चेस प्रतियोगिता में शिवम स्कूल लोहानी का वंश प्रथम, शुभम द्वितीय व अंकुश तृतीय स्थान पर रहा, जैवलिन थ्रो में मनीष देवसर प्रथम, 200 मीटर रेस में राहुल प्रथम, बाधा दौड़ में नितेश प्रथम, कुश्ती 48 किलो वर्ग भार में यश प्रथम, 80 किलोग्राम वर्ग भार में हनी प्रथम, कुश्ती में ही ऋषभ प्रथम, 400 मीटर रेस में देवांशु द्वितीय स्थान पर रहा। शिवम स्कूल लोहानी के ये सभी खिलाड़ी जिला स्तरीय खेलों में कैरू खंड का प्रतिनिधित्व करेंगे। डायरेक्टर श्री निशांत तंवर व प्रिंसिपल श्री संजय शर्मा ने जिला स्तर पर भाग लेने वाले इन सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी।

भिवानी। प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागी। फोटो : हरिभूमि

परसराम हेतराम विद्यालय की बेटियों ने नेटबॉल में जीता खिताब और बेटे भी बने उपविजेता

चरखी दादरी। दादरी के परसराम हेतराम विद्यालय के खिलाड़ियों ने गांव सांवड़ स्थित बाल शिक्षा निकेतन सीनियर सेकेंडरी स्कूल में आयोजित जिला स्तरीय अंडर-17 नेटबॉल प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। प्रतियोगिता में बालिका वर्ग की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त कर जिला चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया, जबकि बालक वर्ग की टीम ने द्वितीय स्थान पर कब्जा जमाया। उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर विद्यालय की दोनों टीमों का चयन राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ है। इस उपलब्धि पर विद्यालय परिसर में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। अध्यक्ष डॉ. पवन बुवानीवाला ने विजेता खिलाड़ियों को मिठाई खिलाकर सम्मानित किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

एसएल इंटरनेशनल विद्यालय के विद्यार्थियों ने खेल प्रतियोगिता में किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

भिवानी। एस एल इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने हाल ही में आयोजित खेल प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया है। विभिन्न खेलों में भाग लेते हुए विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट कौशल, अनुशासन और टीम भावना का परिचय दिया। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अनेक पदक एवं श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किए। विशेष रूप से कक्षा ग्यारहवीं की छात्रा हरिता ने 200 मीटर दौड़ में दूसरा स्थान व लोंग जंप में तीसरा स्थान प्राप्त करके विद्यालय का नाम रोशन किया है।कक्षा बारहवीं के छात्र जयंत ने पांच हजार मीटर दौड़ में जिला स्तर पर तीसरा स्थान हासिल कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। विद्यालय के निदेशक डॉ० सी. पी. मलिक ने इस अवसर पर विद्यार्थियों को नकद राशि का इनाम देकर उन्हें सम्मानित किया और भविष्य में भी विद्यार्थियों को इस तरह सफलता प्राप्त करने के लिए उत्साहित किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रतीक ने सभी विजेता विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि खेल न केवल शारीरिक विकास के लिए आवश्यक हैं, बल्कि यह अनुशासन, आत्मविश्वास और टीम वर्क की भावना भी विकसित करते हैं।

मातनहेल ब्लॉक खेलों में एचडी स्कूल के खिलाड़ियों का दबदबा

चरखी दादरी। मातनहेल खंड स्तरीय हरियाणा स्कूली खेल प्रतियोगिताओं में एचडी स्कूल, बिरोहड़ के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विभिन्न खेलों में प्रथम व द्वितीय स्थान हासिल कर विद्यालय, अभिभावकों और क्षेत्र का नाम गौरवान्वित किया। प्रतियोगिता में विद्यालय की वॉलीबाल टीम ने सबसे प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए अंडर-14, अंडर-17 और अंडर-19 वर्ग में लड़के तथा लड़कियों की सभी छह टीमों को प्रथम स्थान दिलाया। खो-खो प्रतियोगिता में अंडर-17 बालिका वर्ग ने प्रथम तथा अंडर-14 बालिका वर्ग ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। शतरंज में यशराज, चिराग, हर्षित और हर्ष ने प्रथम स्थान हासिल किया। कुश्ती में हार्दिक, भावेश, तनुज, हिमांशु, रोनक, आर्यन और प्रिया ने अपने-अपने भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। बॉक्सिंग में दीपांशु ने सराहनीय प्रदर्शन किया। एथलेटिक्स में हन्नी ने 600 और 200 मीटर दौड़ शॉनदार प्रदर्शन किया।

भिवानी। प्रतियोगिता में विजेता एचडी पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

कबड्डी में मेजबान डालावास ने बाजी मारी

बाढड़ा। शिक्षा विभाग द्वारा गांव डालावास के स्कूल खेल मैदान में संचालित तीन दिवसीय स्कूली खेलकूद स्पर्धा संपन्न हो गई है जिसमें विजेता टीमो का जिलास्तरीय खेलो का चयन किया गया है। स्कूली खेलकूद स्पर्धा की कबड्डी स्पर्धा में मेजबान डालावास ने बाजी मारी जिनको खंड शिक्षा अधिकारी विशंबर ने सम्मानित किया। जोन प्रभारी सुनील पीटीआई ने बताया कि तीन दिवसीय स्कूली खेल कूद स्पर्धा में पांच दर्जन स्कूलों के खिलाडियों ने उत्साह पूर्वक भागीदारी। खेल कूद स्पर्धा की लडक़ों के तीन हजार मीटर दौड़ प्रतियोगिता में एवरेस्ट इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थी सहदेव कुमार प्रथम, राजकीय विद्यालय डूडीवाला के कार्तिक द्वितीय, श्याम कलां के दीपांशु तृतीय रहे। 17 वर्ष आयुवर्ग 1500 मीटर दौड़ में स्कूल बेरला के खिलाड़ी सूरज कुमार प्रथम, नांधा विद्यालय के खिलाड़ी देव कुमार दूसरे व कादमा का खिलाड़ी युवराज तृतीय रहे।

न्यूज डायरी

आनंद स्कूल में कारगिल विजय दिवस मनाया

बवानीखेड़ा। आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस, मिलकपुर में कारगिल विजय दिवस एवं अच्छे संस्कार विषय पर भव्य एवं देशभक्ति से ओत-प्रोत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कक्षा तीसरी से बारहवीं तक के विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह और उमंग के साथ भाग लिया। विद्यार्थियों ने कारगिल युद्ध में भारतीय सेना के अदम्य साहस और बलिदान को याद करते हुए देशभक्ति से भरे भाषण और मनमोहक कविताएं प्रस्तुत कीं। इसके साथ ही, जीवन में नैतिक मूल्यों और अच्छे संस्कारों के महत्व को रेखांकित करते हुए छात्रों ने एक प्रभावशाली स्किट (नाटिका) का मंचन किया, जिसने उपस्थित सभी लोगों को भावविभोर कर दिया।

पीएमश्री में सुनाई शहीदों के शौर्य की गाथा

भिवानी। गांव बजीणा स्थित वीर शहीद शीशपाल पीएमश्री राजकीय वमा विद्यालय में शनिवार को एनएसएस इकाई के तत्वावधान में कारगिल विजय दिवस का आयोजन बड़े ही श्रद्धा, उत्साह और देशभक्ति के माहौल में किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के भीतर देशभक्ति की भावना को जागृत करना और उन्हें देश की रक्षा में प्राण न्योछावर करने वाले वीर जवानों के अदम्य साहस एवं बलिदान से रूबरू करवाना था। विद्यालय में विशेष प्रार्थना सभा व जागरूकता सत्र का आयोजन किया।
, जिसमें स्वयंसेवकों सहित पूरे विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

बीके विद्यालय में मनाया कारगिल विजय दिवस

बवानीखेड़ा। बीके वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में 'कारगिल विजय दिवस' मनाया गया। विद्यालय का पूरा प्रांगण देशभक्ति के रंग से रंगा हुआ दिखाई दिया साथ ही विद्यालय 'भारत माता की जय' के नारों से गूंज उठा। कक्षा छठी से आठवीं तक के विद्यार्थियों ने इस 'कारगिल विजय दिवस' के उपलक्ष्य पर बढ़-चढ़कर भाग लिया। सर्वप्रथम विद्यालय प्राचार्य पंकज कुमार मिश्रा, विद्यालय प्रबंधन समिति के उपाध्यक्ष जोगिंदर जांगड़ा, एन. एस. एस. प्रभारी अमित कुमार, सदन प्रभारी मीनू वालिया, मीनाक्षी, सिंपी रानी, गतिविधि प्रभारिका सोनम ने कारगिल में शहीद हुए वीरों की प्रतिमा पर पुष्पार्पण कर अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त की।

शहीद गुलाब सिंह पार्क में प्रतिज्ञा सेवा समिति ने लगाए पौधे

बवानीखेड़ा। सामाजिक सरोकारों और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाते हुए प्रतिज्ञा सेवा समिति द्वारा बवानीखेड़ा के शहीद गुलाब सिंह पार्क में वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान समिति के सदस्यों ने दर्जनों पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया तथा उनके संरक्षण का भी संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रतिज्ञा सेवा समिति के अध्यक्ष संजय वर्मा के नेतृत्व में जोगेंद्र काजल, दीपांशु जांगड़ा, सुरेश नहाड़िया, सचिन नहाड़िया, अरुण राजपूत, भीम काजल एवं पवन गोरिया सहित अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं ने सक्रिय भागीदारी निभाई। समिति सदस्यों ने कहा कि वृक्ष मानव जीवन का आधार हैं और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

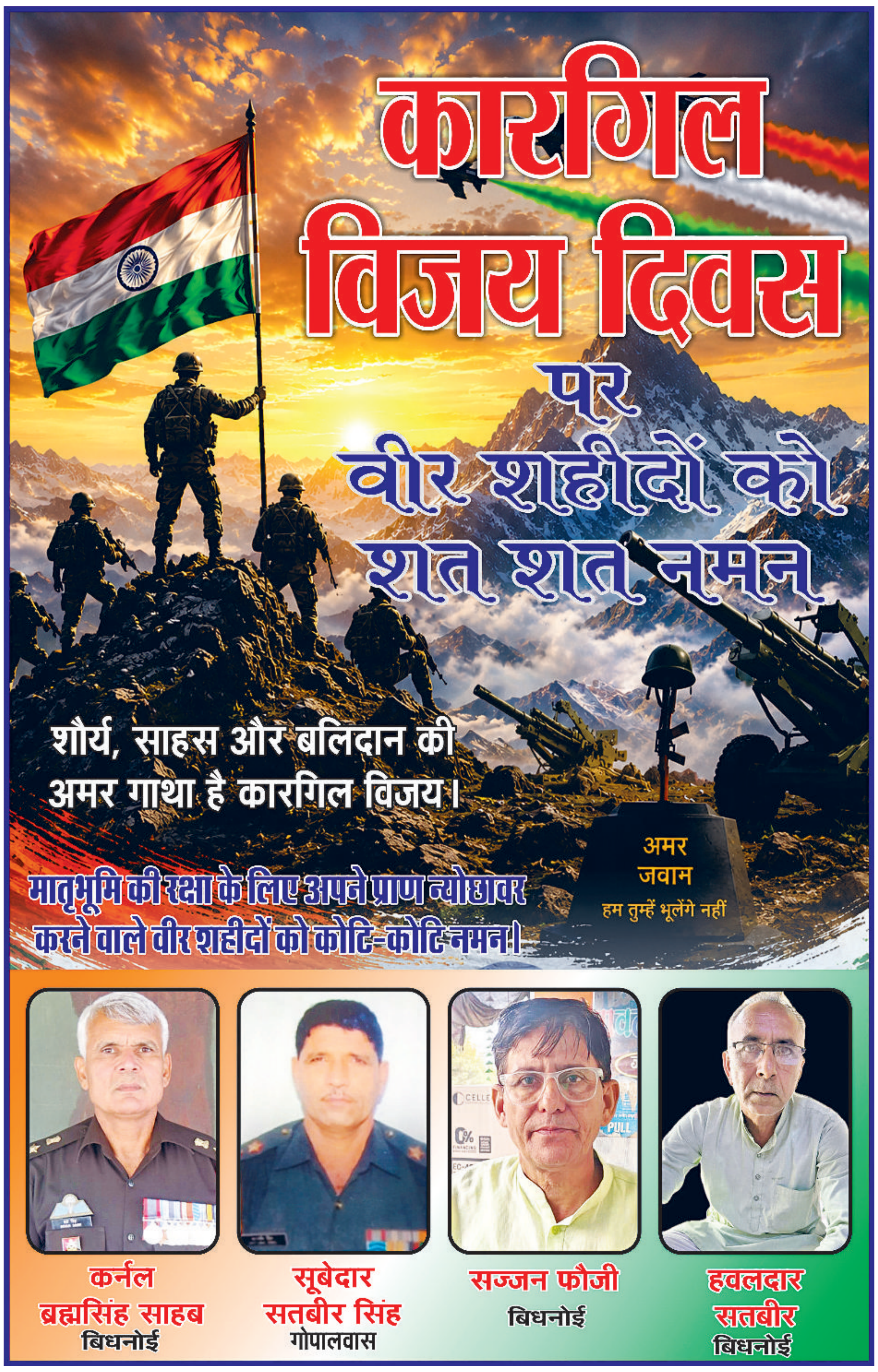

कारगिल विजय दिवस विशेषांक, भिवानी

कारगिल विजय दिवसः शौर्य, साहस और बलिदान की अमर गाथा

भारत के इतिहास में 26 जुलाई का दिन देशभक्ति, शौर्य और अदम्य साहस की याद दिलाने वाला विशेष दिन है। प्रत्येक वर्ष 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिवस वर्ष 1999 में कारगिल युद्ध के दौरान भारतीय सेना के वीर जवानों द्वारा प्रदर्शित असाधारण साहस, रणनीतिक कौशल और सर्वोच्च बलिदान को नमन करने का अवसर है। कारगिल की दुर्गम पहाड़ियों पर भारतीय सैनिकों ने विपरीत परिस्थितियों में जिस वीरता का परिचय दिया, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा प्रेरणास्रोत बनी रहेगी।

वर्ष 1999 में जम्मू-कश्मीर के कारगिल क्षेत्र में पाकिस्तानी सैनिकों और घुसपैठियों ने नियंत्रण रेखा (एलओसी) के भारतीय क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण ऊंची चोटियों और रणनीतिक स्थानों पर कब्जा कर लिया था। इन घुसपैठियों की मौजूदगी का पता चलने के बाद भारतीय सेना ने स्थिति का आकलन किया और देश की सीमाओं की रक्षा के लिए व्यापक सैन्य अभियान शुरू किया।

भारतीय सेना ने इस अभियान को 'ऑपरेशन विजय' नाम दिया। मई 1999 से शुरू हुआ यह संघर्ष बेहद कठिन परिस्थितियों में लड़ा गया। कारगिल क्षेत्र की ऊंची और दुर्गम पहाड़ियों, कम तापमान, खड़ी चट्टानों और सीमित संसाधनों के बीच भारतीय सैनिकों ने दुश्मन के मजबूत ठिकानों को एक-एक करके मुक्त कराया।

दुर्गम पहाड़ियों पर अद्भुत पराक्रम

कारगिल युद्ध की सबसे बड़ी चुनौती थी ऊंची चोटियों पर बैठे दुश्मन को नीचे से हमला करके पीछे हटाना। सामान्य युद्ध परिस्थितियों के विपरीत भारतीय जवानों को ऊंचाई पर मौजूद दुश्मन के ठिकानों तक पहुंचने के लिए खड़ी चट्टानों पर चढ़ाई करनी पड़ती थी। दुश्मन को ऊंचाई का रणनीतिक लाभ प्राप्त था, फिर भी भारतीय सैनिकों के हौसले में कोई कमी नहीं आई।

टोलोलिंग, टाइगर हिल, प्वाइंट 4875 और अन्य महत्वपूर्ण चोटियों पर भारतीय जवानों ने अद्वितीय साहस दिखाया। सेना के जवानों ने रात के अंधेरे में कठिन चढ़ाई करते हुए दुश्मन के ठिकानों पर हमला किया और कई महत्वपूर्ण चोटियों पर तिरंगा फहराया। इन अभियानों में अनेक सैनिकों ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

टाइगर हिल की विजय

कारगिल युद्ध की सबसे चर्चित उपलब्धियों में टाइगर हिल पर विजय प्रमुख थी। यह चोटी सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण थी। भारतीय सैनिकों ने अत्यंत कठिन परिस्थितियों में अभियान चलाकर इस चोटी पर कब्जा किया। टाइगर हिल पर तिरंगा फहराना भारतीय सेना के अदम्य साहस और संकल्प का प्रतीक बन गया।

इस युद्ध में भारतीय सैनिकों ने यह साबित किया कि देश की संप्रभुता और अखंडता की रक्षा के लिए वे किसी भी चुनौती का सामना करने को तैयार हैं। उनकी बहादुरी ने पूरे देश को एकजुट कर दिया और करोड़ों भारतीयों के मन में देशभक्ति की भावना को और मजबूत किया।

वीर जवानों का सर्वोच्च बलिदान

कारगिल युद्ध केवल सैन्य विजय की कहानी नहीं है, बल्कि यह उन वीर सैनिकों के बलिदान की गाथा भी है जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए

अपने प्राण न्योछावर कर दिए। भारतीय सेना के अनेक जवानों ने युद्धभूमि में सर्वोच्च बलिदान दिया। उनके परिवारों ने भी अपार पीड़ा सहते हुए देश के प्रति अपने कर्तव्य को सर्वोपरि रखा।

कैप्टन विक्रम बत्रा, लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडेय, ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव और राइफलमैन संजय कुमार जैसे वीरों के नाम कारगिल युद्ध के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हैं। इनके अलावा भी बड़ी संख्या में सैनिकों ने असाधारण वीरता का परिचय दिया। कई वीरों को उनके अदम्य साहस के लिए देश के सर्वोच्च सैन्य सम्मानों से सम्मानित किया गया।

देशवासियों की एकजुटता

कारगिल युद्ध के दौरान भारतीय सेना के साथ पूरा देश खड़ा दिखाई दिया। देश के विभिन्न हिस्सों से लोगों ने सैनिकों के लिए सहायता और समर्थन भेजा। विद्यालयों, महाविद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं में सैनिकों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित किए गए। देशवासियों ने अपने जवानों के प्रति जिस एकजुटता और सम्मान का प्रदर्शन किया, उसने सैनिकों का मनोबल और मजबूत किया।

कारगिल युद्ध ने यह भी दिखाया कि भारत की सुरक्षा केवल सीमा पर तैनात जवानों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह देश की एकता, अखंडता और संप्रभुता के प्रति सजग रहे।

कारगिल विजय दिवस का महत्व

26 जुलाई 1999 को भारतीय सेना ने कारगिल क्षेत्र में विजय की घोषणा की। इसी ऐतिहासिक जीत की स्मृति में हर वर्ष 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस मनाया जाता है। इस दिन देशभर में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि दी जाती है।

कारगिल विजय दिवस हमें यह याद दिलाता है कि स्वतंत्रता और राष्ट्रीय सुरक्षा की कीमत बहुत बड़ी है। देश की सीमाओं पर तैनात सैनिक कठिन परिस्थितियों में अपने परिवारों से दूर रहकर राष्ट्र की रक्षा करते हैं। उनकी सतर्कता के कारण ही देशवासी सुरक्षित वातावरण में अपने दैनिक जीवन का संचालन कर पाते हैं।

युवाओं के लिए प्रेरणा

कारगिल विजय दिवस विशेष रूप से युवाओं के लिए प्रेरणादायक है। वीर सैनिकों की कहानियां हमें साहस, अनुशासन, नेतृत्व, त्याग और राष्ट्रप्रेम का संदेश देती हैं। यह दिवस युवाओं को बताता है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी यदि लक्ष्य स्पष्ट हो और मन में दृढ़ संकल्प हो तो सफलता प्राप्त की जा सकती है।

आज की पीढ़ी के लिए कारगिल युद्ध केवल इतिहास की एक घटना नहीं, बल्कि देश के प्रति जिम्मेदारी और कर्तव्य का जीवंत उदाहरण है। युवाओं को शहीदों के जीवन और उनके आदर्शों से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देना चाहिए।

शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि

शहीदों को याद करना केवल एक दिन तक सीमित नहीं होना चाहिए। उनके बलिदान का सम्मान तभी सार्थक होगा जब हम देश की एकता और अखंडता को मजबूत करने के लिए अपना योगदान दें। हमें अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करना चाहिए, राष्ट्रीय संपत्ति की रक्षा करनी चाहिए और समाज में आपसी भाईचारा एवं सद्भाव बनाए रखना चाहिए।

कारगिल विजय दिवस हमें यह संकल्प लेने का अवसर देता है कि हम देश की संप्रभुता, एकता और अखंडता के प्रति हमेशा प्रतिबद्ध रहेंगे। हमारे सैनिकों ने जिस साहस के साथ देश की सीमाओं की रक्षा की, उसी भावना से प्रत्येक नागरिक को अपने क्षेत्र में ईमानदारी और जिम्मेदारी के साथ कार्य करना चाहिए।

अमर रहेगा शहीदों का बलिदान

कारगिल की बर्फीली चोटियों पर लड़ी गई लड़ाई भारतीय सेना के अदम्य साहस की अमर कहानी है। उन वीर जवानों ने अपने प्राणों की चिंता किए बिना तिरंगे की शान के लिए संघर्ष किया। उनकी वीरता ने पूरे देश को गर्व से भर दिया और यह संदेश दिया कि भारत की सीमाओं की रक्षा करने वाले सैनिक किसी भी चुनौती के सामने झुकने वाले नहीं हैं।

आज जब देश कारगिल विजय दिवस मना रहा है, तब हमें उन सभी वीर सैनिकों को नमन करना चाहिए जिन्होंने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। उनकी वीरगाथाएं हमेशा देशवासियों के दिलों में जीवित रहेंगी और आने वाली पीढ़ियों को राष्ट्रप्रेम, साहस और त्याग की प्रेरणा देती रहेंगी।

कारगिल के वीर शहीदों को
शत-शत नमन।
भारत माता के वीर सपूत अमर रहें।
जय हिंद!

नरेंद्र दिनोद राज्य प्रधान,
हरियाणा रोडवेज वर्कर्स यूनियन संबंधित सर्व कर्मचारी संघ हरियाणा

सूरजमल लेघां, कनिष्ठ अभियंता,
डीएचबीवीएन एवं राज्य उपप्रधान हरियाणा कर्मचारी महासंघ
एवं पूर्व सर्कल सचिव विद्युत निगम भिवानी।

जयबीर नाफरिया,
सदस्य, अखिल भारतीय राज्य कर्मचारी परिसंघ,
प्रदेश प्रवक्ता,हरियाणा कर्मचारी महासंघ एवं अध्यापक संघ

ईश्वर शर्मा,
जिला उपाध्यक्ष,
जिला कांग्रेस कमेटी शहरी भिवानी
एवं जिला प्रधान, रिटायर्ड कर्मचारी संगठन

रमेशचन्द्र बूरा
पूर्व कार्यवाहक खण्ड शिक्षा अधिकारी एवं प्रिंसीपल रिटायर्ड,
प्रैस प्रवक्ता, ग्राम विकास एवं शिक्षा समिति प्रेमनगर,
प्रेस प्रवक्ता एवं संयोजक धरना समिति प्रेमनगर

जेई बिजेश जावला
योगाचार्य, रक्तवीर एवं पर्यावरण रक्षक

विनोद प्रजापति
नगर पार्षद, वार्ड नंबर 25 भिवानी

महाबीर चहल
समाजसेवी, गोकलपुरा, बहल

किशन कौशिक
समाजसेवी एवं
ब्राह्मण सभा के जिला प्रधान

जयबीर अहलान बलियाली
प्रदेश महासचिव, हरियाणा जागृति मोर्चा एनजीओ
बवानीखेड़ा , भिवानी

कारगिल
विजय दिवस
पर
वीर शहीदों को
शत शत नमन

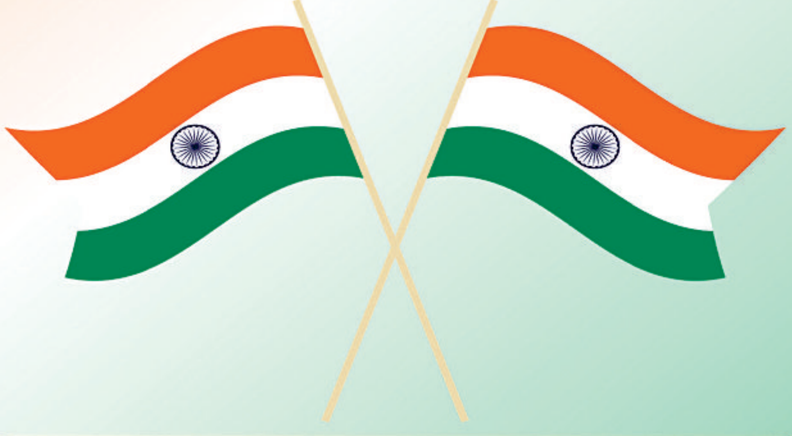

अपने शौर्य और पराक्रम से जिन्होंने तिरंगे की रक्षा के लिए अपने प्राण निःसंकोच त्याग दिए उन सभी शहीदो को भावपूर्ण श्रद्धांजलि

दीपक बंसल
मुख्य सचिव, हरियाणा प्राकृतिक विकित्सालय,
उप-प्रधान, अग्रसेन ट्रस्ट भवन,
निर्विरोध सदस्य, वैश्य एजुकेशन सोसाइटी, रोहतक, ट्रस्टी, वेद ट्रस्ट

एडवोकेट आलोक कुमार

नरेंद्र सर्राफ पूर्व पार्षद

नरेश मीनू अग्रवाल

एडवोकेट मुकेश रहेजा
प्रदेश सह-संयोजक विधि विभाग, भाजपा

एडवोकेट मनोज कुमार
पार्षद वार्ड नं. 23, भिवानी

आनंद बासिया
पूर्व पार्षद

रिंकू ख्याली राम
नूर ज्वैलर्स, भिवानी

अंचल अरोड़ा
कला और संस्कृति विभाग के जिला उप-प्रधान
प्रधान, मनोहर मोर्चा, हिसार

मनीष टूटेजा
विजय इलेक्ट्रॉनिक्स, भिवानी

आषाढ़ बीतने वाला है, सावन का महीना शुरू होने वाला है। रिमझिम फुहारों से भीगी हरी-भरी प्रकृति और मन को प्रफुल्लित करने का यह मौसम हमें आमंत्रित करता है कि आइए, एक बार फिर अपने बचपन में लौट जाएं। बारिश की फुहारों में तन मन को भिगो लें, अपनों के संग यादगार पल बिता लें, उनके साथ झूम लें। यकीन मानिए, ये पल आप कभी नहीं भूल पाएंगे।

आइए फिर बन जाएं बच्चे
रिमझिम बारिश का लें जी भर मजा

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

आधुनिक भागदौड़ और तनाव भरी जिंदगी में अगर बारिश के मौसम का असली आनंद लेना है, तो हमें अपने भीतर के बचपन को फिर से जगाना होगा। यानी आने वाले सावन-भादो के दिनों का मजा लेने के लिए बन जाएं बच्चे, थोड़े से अक्ल के कच्चे। तर्क, समझदारी और दुनियादारी के बोझ को किनारे रखकर, एक बच्चे जैसी मासूमियत और बेफिक्री से इस मौसम को जीना सीख लें तो पूरे साल जीवन ऊर्जा से लबरेज रह सकते हैं।

समेट लें हर बूंद: बारिश के ये भीगे-भीगे दिन साल में एक बार आते हैं और हमें यह संदेश देते हैं कि जिंदगी सिर्फ काम करने, पैसे कमाने और जिम्मेदारियां निभाने का नाम ही नहीं है। इस मौसम के बहाने प्रकृति हमें खुलकर हंसने, भीगने और गाने का न्यौता देती है। इसलिए इन दिनों में अपनी सारी 'अक्लमंदी' को कुछ दिनों के लिए आराम करने भेज दीजिए। दिल से पूरी तरह 'बच्चे' बनिए और सावन-भादो की हर एक बूंद को अपने भीतर समेट लीजिए। क्योंकि समझदारी में भले ही सुरक्षा हो, पर असली आनंद तो बेफिक्री की मासूमियत में ही मिलती है।

तर्क छोड़ लें आनंद: बड़े होने पर हम हर चीज में नफा-नुकसान, सही-गलत और लॉजिक ढूंढ़ने लगते हैं। बारिश का यह मौसम तर्क का नहीं, बल्कि अहसास का उत्सव है। जब आसमान से बूंदें गिरती हैं, तो एक समझदार व्यक्ति कपड़े भीगने या बीमार पड़ने के डर से छतरी तान लेता है। इसके विपरीत, मासूम बच्चे बिना किसी बचाव के बारिश की बूंदों का मजा लेने लगते हैं। बारिश का असली मजा लेने के लिए पहली शर्त यही है कि हम कुछ समय के लिए अपनी प्रौढ़ उम्र की समझदारी को भूलकर प्रकृति के इस उपहार को स्वीकार करें।

भीगने का बेबाक उल्लास: छत पर जाकर या सड़कों पर बाहें फैलाकर आसमान से गिरती बूंदों को अपने चेहरे पर महसूस करना एक थेरेपी की तरह है। जब आप 'बच्चे' बन जाते हैं, तो आपको इस बात की परवाह नहीं होती कि लोग क्या कहेंगे या आपके जूते खराब हो जाएंगे। बारिश का पानी हमारे तन के साथ-साथ मन के तनाव को भी धो देता है। यह बेफिक्री ही बारिश को खास बनाती है।

कागज की कश्ती से दोस्ती: 'वो कागज की कश्ती, वो बारिश का पानी।' मशहूर शायर सुदर्शन फाकिर द्वारा लिखी यह बेहद खूबसूरत नज्म वर्षा ऋतु से जुड़ी यादों को सामने ले आती है। बचपन में घंटों बैठकर रंग-बिरंगे कागजों से नाव बनाना और उन्हें बहते पानी में छोड़ना एक अलग ही रोमांच देता था। जब नाव किसी बाधा को पार कर आगे निकल जाती, तो मन खुशी से झूम उठता था। क्यों न एक बार फिर बच्चा बनकर कागज की कश्ती को बहते पानी में बहाएं। महसूस करें कि छोटी-छोटी चीजों में कितनी बड़ी खुशियां छिपी होती हैं!

नहीं भूलेगी सोंधी महक: तपती गर्मी के बाद जब बारिश की पहली फुहार सूखी धरती पर पड़ती है, तो उससे उठने वाली सोंधी महक आत्मा को तृप्त कर देती है। बारिश में भीगते, मिट्टी में खेलने के दौरान बच्चे इस सोंधी महक से भी जुड़ जाते हैं। आज कंक्रीट के जंगलों और 'स्क्रीन टाइम' के दौर में, बारिश हमें वापस मिट्टी की ओर खींचता है। बिना चप्पल पहने हरी घास और गीली मिट्टी पर चलकर देखिए, यह अनुभूति आप भूल नहीं पाएंगे।

झूले पर पींग बढ़ाने का रोमांच: सावन-भादो के मौसम में पुराने समय में बाग-बगीचों में पेड़ों की डालियों पर रस्सियों के झूले डाले जाते थे। किशोरियां और महिलाएं मिलकर लोकगीत गाती थीं और आसमान छूने की होड़ में पींग बढ़ाती थीं। हवा के झोंकों के साथ ऊपर जाना और फिर तेजी से नीचे आना, दिल की धड़कनों को बढ़ा देता था। आज भले ही वो बाग कम हो गए हों, लेकिन किसी पार्क में या घर की बालकनी में एक छोटा-सा झूला डालकर भीगी हवाओं का आनंद लिया ही जा सकता है। इससे हमारे भीतर का बाल-मन जीवंत हो उठेगा।

फायदेमंद है अक्ल का कच्चापन: 'अक्ल का कच्चा' होने का मतलब मूर्ख होना नहीं, बल्कि 'ओवरथिंकिंग' से मुक्त होना है। बारिश की बूंदें हमसे कहती हैं कि इस पल में जियो। जैसे बच्चे को कल की चिंता नहीं होती, वैसे ही कुछ घंटों के लिए अपनी अक्ल और चिंताओं को ताले में बंद कर देना ही आनंद मार्ग का दरवाजा खोलता है।

लजीज पकवानों का लें मजा: रसोई से घेवर, मालपुए, मूंगदाल के चीले, गरमा-गरम पकोड़े और अदरक वाली चाय की खुशबू, बारिश के मौसम का लुत्फ और बढ़ा देती है। अगर आप समझदार बने रहेंगे तो हमेशा कैलोरी, डाइट और फैट के हिसाब-किताब में उलझे रहेंगे। लेकिन बारिश का मजा तो तब आएगा, जब आप बच्चे की तरह बिना किसी गिल्ट के लजीज व्यंजनों का स्वाद लेंगे।

हरियाली को निहारने का सुख: एक बच्चा प्रकृति के इस बदलाव को बड़े कौतूहल से देखता है। पत्तियों पर अटकी बूंदें, रेंगते हुए छोटे कीट और इंद्रधनुष उसे मोहित कर देते हैं। जब हम एक बच्चे की विस्मय भरी नजरों से इस हरियाली को देखते हैं, तो हमें भी हर शय आकर्षक लगने लगती है। *

गीत-संगीत के संग थिरकन

बारिश सिर्फ देखने या छूने का नहीं, बल्कि सुनने का भी मौसम है। बादलों की गड़गड़ाहट, मेंढकों की टर्र-टर्र, झींगुरों की आवाज और पत्तियों पर गिरती बूंदों का अपना एक संगीत होता है। इसके साथ ही, लोकगीतों और कजरी की परंपरा इस मौसम को संगीतमय बनाती है। कुछ पल के लिए जब आप बच्चे बनते हैं, तो झिझक छोड़कर संगीत की धुन पर अपने परिजन या दोस्तों के संग झूम उठते हैं। बारिश के गानों पर जी भर झूमना या नाचना, मन के भीतर दबे हुए सारे गुबार को बाहर निकाल देता है।

संगीत-कला-मनोरंजन के साथ
सुधरे स्वास्थ्य-बढ़े आयु

अगर आप लंबे समय तक स्वस्थ रहना चाहते हैं, अपनी मेमोरी, सुकून और आयु बढ़ाना चाहते हैं तो अपनी व्यस्त दिनचर्या में से कुछ समय अपने मनोरंजन के लिए निकालिए। कला और संगीत का जीवन पर कैसा सकारात्मक असर पड़ता है, इसका खुलासा हाल में एक स्टडी में हुआ है।

लाइफस्टाइल
अंजू जैन

अगली बार जब आप अपने साप्ताहिक बजट या वीकेंड की योजना बनाएं, तो उसमें केवल मॉल जाने या रेस्टोरेंट में खाना खाने के कार्यक्रम न रखें, बल्कि किसी स्थानीय कला प्रदर्शनी का टिकट लें, किसी नाटक के दर्शक बनें या लाइव संगीत की महफिल का हिस्सा बनें। इससे आपके स्वास्थ्य और जीवन पर सकारात्मक असर पड़ेगा।

क्या कहती है स्टडी: वैज्ञानिकों द्वारा किया गया अध्ययन इस बात का पुख्ता प्रमाण है कि कला कोई विलासिता नहीं, बल्कि दीर्घायु और स्वस्थ जीवन के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है। जाहिर है, कला पर खर्च किया गया आपका समय और पैसा केवल मनोरंजन पर नहीं, बल्कि आपके जीवन के कीमती और स्वस्थ वर्षों को बढ़ाने पर निवेश है। सीधी-सी बात है कि कला से जुड़िए और लंबी उम्र पाइए।

स्टडी का तरीका: जापान के नेशनल सेंटर फॉर जेरियाट्रिक्स एंड जेरोंटोलॉजी और यूके के शोधकर्ताओं ने लगभग 10 से अधिक वर्षों तक हजारों वयस्कों के जीवन चक्र और उनकी सांस्कृतिक आदतों का विश्लेषण किया। वैज्ञानिकों ने डीएनए प्रणालियों और कोशिकाओं के बूढ़े होने की गति को मापा। इस शोध से जो बातें सामने आईं, उनसे यह साबित हुआ है कि सिनेमा, संगीत कार्यक्रम और कला प्रदर्शनियों में भाग लेने से इंसान की जैविक उम्र बढ़ने की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। नियमित रूप से सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय रहने वाले लोगों की उम्र न केवल लंबी होती है, बल्कि उनका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी काफी बेहतर रहता है। इस शोध में शामिल वैज्ञानिकों ने पाया कि जो लोग सप्ताह में कम से कम एक बार किसी सांस्कृतिक गतिविधि (जैसे फिल्म, नाटक या संगीत) का हिस्सा बनते हैं, उनकी जैविक उम्र न जाने वालों की तुलना में लगभग एक वर्ष कम पाई गई। कलात्मक गतिविधियों में सक्रियता से शरीर के बूढ़े होने की वार्षिक दर में करीब 4 प्रतिशत तक की गिरावट देखी गई है। जापान दुनिया में सबसे अधिक औसत आयु वाले देशों में शीर्ष पर है, जिसका एक बड़ा कारण वहां की जीवनशैली है। जब बुजुर्ग या वयस्क किसी पेंटिंग, प्रदर्शनी या लाइव कॉन्सर्ट में जाते हैं, तो उन्हें न केवल मानसिक संतोष मिलता है, बल्कि वे समाज के अन्य लोगों से भी जुड़ते हैं।

व्यायाम जैसा प्रभाव: वैज्ञानिकों का मानना है कि नियमित रूप से कला दीर्घाओं या संगीत समारोहों में जाना शरीर पर उतना ही सकारात्मक जैविक प्रभाव डालता है, जितना कि नियमित व्यायाम करना या धूम्रपान/शराब जैसी लत को छोड़ना।

शारीरिक-मानसिक तंत्र पर प्रभाव: यह शोध केवल सतही आंकड़ों पर आधारित नहीं है, बल्कि इसके पीछे गहरा न्यूरोलॉजिकल और बायोलॉजिकल विज्ञान काम करता है। जब हम किसी मूवी, म्यूजिक कंसर्ट या आर्ट एग्जीबिशन का हिस्सा बनते हैं, तो हमारे शरीर में कई बदलाव होते हैं। जैसे- कलात्मक माहौल में समय बिताने से मस्तिष्क में तनाव पैदा करने वाले हार्मोन 'कोर्टिसोल' का स्तर तुरंत गिर जाता है। इससे हृदय स्वास्थ्य बेहतर होता है और असमय आने वाले हार्ट अटैक का खतरा कम होता है। म्यूजिक कंसर्ट की धुनें या किसी फिल्म की सम्मोहक कहानी हमारे मस्तिष्क में डोपामाइन, ऑक्सीटोसिन और एंडोर्फिन जैसे न्यूरोट्रांसमीटर को रिलीज करती हैं। ये हार्मोन दर्द कम करते हैं, मूड बेहतर बनाते हैं और शरीर में हीलिंग की प्रक्रिया को तेज करते हैं। उम्र बढ़ने और अंगों के खराब होने का बड़ा कारण शरीर के अंदरूनी हिस्सों में होने वाली सूजन है। जो लोग कलात्मक अभिव्यक्तियों से जुड़े, उनके शरीर में 'साइटोकिंस' (सूजन बढ़ाने वाले प्रोटीन) का स्तर कम पाया गया, जिससे इम्यून सिस्टम मजबूत बना रहता है।

अकेलापन वृद्ध अवस्था में एक साइलेंट किलर की तरह काम करता है। थिएटर और कंसर्ट हॉल जैसे सार्वजनिक स्थान लोगों को एक साझा मंच प्रदान करते हैं, जिससे सामाजिक अलगाव खत्म होता है और जीवन जीने की इच्छा मजबूत होती है। *

गीत
प्रो. शरद नारायण खरे

बरखा की बहार

ताल-तलैयां रीत गए थे नदियां भी थीं सूखी।
बुझा-बुझा मन रहता था और काया भी थी रूखी।।
बरखा की बूंदों से पर अब, मिला ख़ुशी का खत है।
बहुत दिनों के बाद सभी की खिली-खिली तबियत है।।
कंठ शुष्क थे, जी घुटता था, बेचैनी मुस्काती।
सारा आलम व्यथित हुआ था, सांसें भी थम जाती
हरियाली धरती पर बिखरी, लगता सुखद सतत है।
बहुत दिनों के बाद सभी की खिली-खिली तबियत है।।
स्वेद बहा करता था निशिदिन पर अब जल साथी है।
आसमान से अमिय बरसता, हर शय अब गाती है।।
मौसम तो मनभावन लगता, हर पल उल्लासित है
बहुत दिनों के बाद सभी की, खिली-खिली तबियत है।।
बूंदें लाईं नवल संदेशे, अमन-चैन के मेले।
बच्चे नाव चलाते जल में, लिए हर्ष के रेले।।
जीवन को नवरूप मिला, कृषक हुआ आनंदित है।
बहुत दिनों के बाद सभी की खिली-खिली तबियत है।।

लघुकथा / संजय मृदुल

गुरु दक्षिणा

रमा ने दरवाजा खोला तो सामने एक नौजवान खड़ा था। असमंजस से डूबे हुए स्वर में रमा ने पूछा, 'जी कहिए, किससे मिलना है आपको?'

'अरे रमा आंटी! पहचाना नहीं मैं हूं रिंटू! कई साल पहले यहीं आपके पड़ोस में रहते थे ना हम।' कहकर रिंटू चुप हो गया।

'अरे हां, रिंटू! इतने सालों बाद तुम्हें यूं देखकर थोड़ी हैरान हो गई थी मैं।' रमा को याद आया तो मुस्कुराते हुए उसका हाथ पकड़ भीतर ले आई। रमा अतीत को याद करने लगी। रिंटू के पिता सरकारी कर्मचारी थे। कई साल पहले ट्रांसफर से यहां पड़ोस में रहने आए थे। दो तीन साल रहकर फिर और किसी शहर में चले गए थे।

'तुम अचानक यहां कैसे बेटा? और तुम्हे हम, ये घर याद था अब तक?' रमा ने रिंटू से प्रश्न किया। 'जी आंटी! मेरी बैंक में नौकरी लगी है और पहली पोस्टिंग इसी शहर में मिली है। कुछ दिन पहले ही आया हूं यहां। मां ने याद दिलाया कि आपसे जरूर मिलना। वैसे भी आंटी, भूलने का तो सवाल ही नहीं उठता आपको। आपकी वजह से तो आज मैं यहां तक पहुंचा हूं। आप की दी हुई सीख भूल चुका होता तो पापा की तरह शराबी, जुआरी हो गया होता।'

रमा को बिसरा हुआ सब याद आने लगा। रिंटू के पिता आदतन शराबी थे। करेला और नीम चढ़ा यह कि जुए का भी जबरदस्त नशा था। आए दिन घर पर महाभारत होता। रिंटू की मां भी परिस्थितियों के कारण गुस्सैल हो गई थी। रोज-रोज की मारपीट, झगड़े ने रिंटू का बचपन छीन लिया था। जैसे ही शाम होती वो भागकर रमा के घर आ जाता। जब तक उसके पिता की आवाज आनी बंद नहीं होती, तब तक उन्हीं के पास दुबका रहता। रमा को भी उस नन्हे बच्चे पर तरस आता। उसे खाने को देती, पढ़ाती, नई बातें सिखाती।

'क्या सोचने लगी आंटी? मैं आपसे ही मिलने आया हूं। आज गुरु पूर्णिमा भी है तो और कभी इससे शुभ मुहूर्त नहीं मिलता आपसे मिलने आपका आशीर्वाद लेने का।' रिंटू की बात सुनकर रमा वर्तमान में लौट आई। रिंटू को इस तरह खुश और विश्वास से भरा हुआ देखकर उसे अच्छा लग रहा था।

'घर में सब कैसे हैं रिंटू?' रमा ने रिंटू से पूछा। 'सब कौन आंटी? मैं और मां ही हैं। पापा तो कुछ साल पहले चल बसे। उनकी जगह मां को नौकरी मिल गई।' कुछ ठहरकर रिंटू फिर बोला, 'याद है आंटी, जब मैं रोज आपके यहां आकर छुपता था, आप कितना समझाती थीं मुझे। जब हम शहर छोड़कर जाने वाले थे आपने एक बात कही थी उसी बात ने मुझे आज यह मुकाम दिया है।'

'ऐसा क्या कहा था मैंने? मुझे तो याद नहीं।' रमा ने सवाल किया।

'हमारे घर की हालत तो आपको याद होगी। जब हम शहर छोड़कर जाने वाले थे, तब आपने मुझसे कहा था- रिंटू! कमल केवल कीचड़ में ही खिलता है। तुम्हारे घर के हालात कितने भी खराब हों तुम कभी अपने पापा की तरह बनने की सोचना भी मत। हमेशा सोचना कि कैसे इनके तरह ना बनूं? खूब पढ़ना, मेहनत करना, अपनी मां को सारी खुशियां देना। देखना एक दिन तुम्हारे पापा भी समझ जाएंगे सुधर जाएंगे। बस सब्र रखना। ...और आंटी जी, मैंने आपकी बात को गांठ बांध लिया। जितनी भी मुश्किल आई, हार नहीं माना। घर में जितना भी माहौल खराब रहा, मां को समझाता रहा कि एक दिन सब अच्छा हो जाएगा। और देखिए आज मैं एक अच्छी नौकरी पर हूं। बस दुःख यही है कि पापा नहीं है। उन्हें भी खुशी तो होती आज।' रिंटू भावुक हो गया। 'बिल्कुल होती बेटा। कौन सा बाप बेटे की सफलता पर खुश नहीं होता। भले ही उन्होंने कितने गलत काम किए...' रमा बोली। 'जी आंटी। आपने जो भी सिखाया था उसी का यह परिणाम है।' कहते हुए रिंटू ने अपने बैग में से कुछ सामान निकाला, 'ये मेरी तरफ से कुछ भेंट है, मेरी तरफ से गुरु दक्षिणा मान कर स्वीकार कर लीजिए।' रमा की आंखों में आंसू झिलमिला उठे। स्नेह से रिंटू के सिर पर हाथ फेरा। वाकई कीचड़ में कमल खिलते देख लिया था उसने। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

समय-समाज की कहानियां

गत वर्ष दिवंगत हुए प्रखर कथाकार अवधेश प्रीत की नई कहानियों के संग्रह 'मिनी और अन्य कहानियां' में बारह कहानियां संकलित हैं। इन कहानियों में जहां एक ओर लेखक की वह गहन दृष्टि नजर आती है, जिससे वे अपने समय में होने वाले विचलन को लक्षित करते हैं, साथ ही राजनीतिक और सामाजिक सरोकारों को लेकर उनकी प्रतिबद्धता भी प्रकट होती है। शीर्षक कहानी 'मिनी' का फलक अत्यंत विस्तृत है, जिसमें मीडिया की भूमिका, लोगों के चारित्रिक क्षरण और स्त्री चेतना को स्वर दिया गया है। 'ये शरीफ लोग' कहानी हमारे समय की राजनीति और समाज के उस स्याह यथार्थ को सामने लाती है, जिसमें एक स्त्री भरपूर संकल्प के साथ संघर्ष के लिए कदम तो बढ़ाती है लेकिन लोगों के संबल के अभाव में हार मान लेती है। 'बारिश' कहानी आम इंसान के रोजमर्रा के खटराग और उसके अंतर्द्वंद्व को सामने लाती है। 'कॉफी' एक वृद्ध दंपती की भावनाओं और उनके अतीत की स्मृतियों को व्यक्त करती है तो 'उस मोड़ का अफसाना' अपने-अपने दांपत्य जीवन से आबद्ध दो सहेलियों के अतीत और वर्तमान प्रेम संबंध की कोमल-खुरदरी अनुभूतियों को पूरी भावुकता से स्वर देती है। पठनीयता से भरपूर और भाषा में स्थानीयता की सोंधी गंध लिए ये कहानियां, आत्मविवेचन के लिए भी प्रेरित करती हैं। *

किताब: मिनी और अन्य कहानियां(कहानी-संग्रह), **लेखक:** अवधेश प्रीत,
मूल्य: 299 रुपए, **प्रकाशक:** राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

सीजनल ट्रैवलिंग / समीर चौधरी

जुलाई-अगस्त के महीनों में जहां देश के अधिकांश हिस्से बारिश से सराबोर रहते हैं, वहीं कुछ खूबसूरत पर्यटन स्थल, इस मौसम में और भी मोहक और आकर्षक हो जाते हैं। कहीं फूलों की घाटियां खिल उठती हैं, तो कहीं झरने, जंगल, पहाड़ और धुंध पर्यटकों को शानदार अनुभव प्रदान करते हैं। यहां देश के ऐसे ही कुछ शानदार मानसून ट्रैवल डेस्टिनेशंस के बारे में बता रहे हैं।

मानसून में घुमक्कड़ी के लिए बेस्ट
ये अमेजिंग ट्रैवल डेस्टिनेशंस

हरियाली से ढंकी वादियों वाला कुर्ग

कर्नाटक राज्य में स्थित कुर्ग, दक्षिण भारत का सबसे विख्यात मानसून ट्रैवल डेस्टिनेशन है। जुलाई-अगस्त के महीने में यह स्थान कोहरे से ढंके कॉफी प्लांटेशनों, पानी से भरे झरनों और हरे-भरे जंगलों में तब्दील हो जाता है। इन्हीं महीनों में ही यहां कक्काडा का कोडव माह भी पड़ता है, जब बांस, जंगली मशरूम और मेडिसिनल यूज वाली मड्डु थोप्प पत्तियां, स्थानीय व्यंजनों का हिस्सा बन जाती हैं। आप यहां पहाड़ों में लॉन्ग ड्राइव करते हुए ऐबी फाल्स, राजा की सीट और दुबारे एलीफैंट कैंप पर रुक सकते हैं या प्लांटेशन स्टे में रहकर बारिश का आनंद ले सकते हैं। *

शांत-मनमोहक हिल स्टेशन भंडारदरा

महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित एक बेहद खूबसूरत और शांत हिल स्टेशन है भंडारदरा। यह सह्याद्री की पहाड़ियों में प्रवारा नदी के किनारे बसा हुआ है और अपने शानदार झरनों, प्राचीन किलों और हरी-भरी वादियों के लिए जाना जाता है। यह मुंबई से लगभग 185 किलोमीटर दूर है। सड़क मार्ग से गाड़ी द्वारा यहां पहुंचने में करीब 4 से 4.5 घंटे का समय लगता है। यहां के प्रमुख आकर्षणों में से एक विल्सन डैम, प्रवारा नदी पर बना भारत के सबसे पुराने बांधों में से एक है। बारिश के मौसम में विल्सन डैम से गिरता हुआ पानी बिल्कुल छतरी जैसा आकार बनाता है, इसीलिए इसे अंब्रेला फॉल कहते हैं। यहां स्थित रंधा फॉल को 'इंडियन नियाग्रा फॉल्स' भी कहा जाता है, जो एक गहरी खाई में लगभग 170 फीट की ऊंचाई से गिरता है। इस धुंध भरे मौसम में भंडारदरा में कैंपिंग का भरपूर आनंद ले सकते हैं। *

हिमालय की गोद में बसी फूलों की घाटी

जुलाई-अगस्त में उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित फूलों की घाटी, जो कि यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज में लिस्टेड है, भी खिलने लगती है। हजारों अल्पाइन फूल पश्चिम हिमालय की गोद में बसी इस वादी को रंगों के इंद्रधनुष में बदल देते हैं। यह खूबसूरत घाटी साल में सीमित समय (1 जून से 31 अक्टूबर) के लिए ही खुलती है क्योंकि यह अधिकतर समय बर्फ से ढंकी रहती है। फूलों की घाटी की सैर करते हुए आप हेमकुंड साहिब भी जा सकते हैं जो एक सिख धर्मावलंबियों का तीर्थ स्थल है और इसी मौसम में दर्शन के लिए खुलता है। *

सुंदर-मनमोहक लैंडस्केप तवांग

अरुणाचल प्रदेश में तवांग की यात्रा करने के लिए भी सबसे अच्छा महीना जुलाई-अगस्त ही है। ऊंचाई पर बसे इस शहर में तापमान ठंडा रहता है और हरे-भरे पहाड़ी लैंडस्केप आकर्षित करते हैं। सेला पास, माधुरी झील और बुम-ला का कुदरती सौंदर्य आप कभी नहीं भूल पाएंगे। अगर मौसम खराब न हो तो कुछ समय 17वीं शताब्दी में निर्मित तवांग मठ में भी अवश्य गुजारें। यह भारत का सबसे बड़ा बौद्ध मठ है। इसके साथ ही यहां फूलों भरी घाटियां और घुमावदार ग्लेशियर झीलें भी दर्शनीय हैं। *

जन्नत जैसा लाहौल-स्पीति

हिमाचल प्रदेश में पहले लाहौल और स्पीति के रूप में दो अलग-अलग जिले थे, लेकिन अब इन्हें मिलाकर एक जिला लाहौल-स्पीति कर दिया गया है। जुलाई के महीने में इस क्षेत्र में पर्यटकों के आने का सिलसिला शुरू हो जाता है, क्योंकि बर्फ पिघलना आरंभ हो जाती है और सड़कों पर चलना संभव हो जाता है। एडवेंचर पसंद करने वालों, प्रकृति प्रेमियों और शहरी जीवन की तेजी व शोर-शराबे से बचने वालों के लिए लाहौल-स्पीति जुलाई-अगस्त के महीनों में जन्नत जैसा हो जाता है। इस समय मौसम इतना सुहावना होता है कि ठंड का एहसास तक नहीं होता और गर्मी लगने का तो सवाल ही नहीं उठता है। सबसे अच्छी बात यह है कि लाहौल-स्पीति, रेन शैडो एरिया है, जिसका अर्थ है कि यहां जुलाई में न के बराबर बारिश पड़ती है, इसलिए जब देश के बाकी हिस्सों में मानसून अपने चरम पर होता है तो उससे बचने के लिए लाहौल-स्पीति में आनंदमय शरण ली जा सकती है। *

कांवड़ यात्रा शिवभक्ति के साथ संकल्प-श्रद्धा की पावन यात्रा

कंधों पर कांवड़, पैरों में छाले और जुबां पर सिर्फ एक ही उद्घोष- हर-हर महादेव। सावन आते ही सड़कों पर उमड़ता आस्था का यह जनसैलाब, सदियों पुरानी उस परंपरा की कहानी कहता है, जहां आस्था, त्याग और शिवभक्ति साथ-साथ चलते हैं।

आस्था
शिखर चंद जैन

शिव आराधना का सबसे पावन और कठिन अनुष्ठान है कांवड़ यात्रा। श्रावण मास की शुरुआत से ही चारों ओर 'बम-बम भोले', 'बोल बम' और 'हर-हर महादेव' की गूंज सुनाई देने लगती है। केसरिया वस्त्र पहने लाखों श्रद्धालु कांवड़िए पवित्र नदियों से जल भरकर पैदल यात्रा करते हैं और शिवलिंग पर जलाभिषेक करते हैं। कांवड़ यात्रा केवल एक धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि अगाध श्रद्धा, मानसिक संकल्प और शारीरिक सहिष्णुता का जीवंत प्रतीक है। ऊंच-नीच के भेदभाव को भुलाकर, केवल शिव भक्ति में लीन होकर एक ही दिशा में कदम बढ़ाना इस यात्रा को अलौकिक और अद्वितीय बनाता है।

कांवड़ यात्रा की शुरुआत: कांवड़ यात्रा की शुरुआत को लेकर कई धार्मिक-पौराणिक कथाएं एवं मान्यताएं प्रचलित हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार परशुराम जी को सबसे पहला कांवड़िया माना जाता है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के बागपत के पास 'पुरा महादेव' नाम के दिव्य शिवलिंग की स्थापना की थी। परशुराम जी ने गढ़मुक्तेश्वर से पवित्र गंगाजल लाकर इस शिवलिंग पर जलाभिषेक किया था। उस समय श्रावण मास चल रहा था। तभी से इस परंपरा की शुरुआत मानी जाती है। एक अन्य कथा के अनुसार, समुद्र मंथन के समय जब हलाहल विष निकला, तो ब्रह्मांड को बचाने के लिए भगवान शिव ने उसे अपने कंठ में धारण कर लिया। विष के प्रभाव से शिव जी का कंठ नीला पड़ गया और उनका शरीर तपने लगा। शिव जी के शरीर की जलन को शांत करने के लिए सभी देवताओं ने उन पर पवित्र नदियों का जल चढ़ाया। रावण द्वारा वैद्यनाथ धाम में गंगाजल लाकर शिव जी को अर्पित करने की कथा भी प्रचलित है।

कांवड़ यात्रा की महत्ता: यात्रा के दौरान कांवड़िए मांस, मदिरा, तामसिक भोजन और अपशब्दों से पूरी तरह दूर रहते हैं। बिना जूते-चप्पल के पैदल चलना सहनशीलता सिखाता है। मान्यता है कि जो भक्त सच्चे मन से गंगाजल लाकर शिव जी का अभिषेक करता है, उसकी सभी सांसारिक बाधाएं दूर हो जाती हैं और मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

कई प्रकार की कांवड़ यात्राएं

सामान्य कांवड़: इसमें कांवड़िए आराम से यात्रा करते हैं। वे रास्ते में बने शिविरों में रुक सकते हैं, भोजन कर सकते हैं और सो सकते हैं। रुकने के दौरान कांवड़ को स्टैंड या पेड़ पर टांगा जाता है।
डाक कांवड़: इसमें जल भरने के बाद कांवड़िया बिना रुके लगातार दौड़ता या तेज चलता है। यदि कोई डाक कांवड़िया थक जाता है, तो उसकी टीम का दूसरा सदस्य कांवड़ लेकर दौड़ना शुरू करता है।
खड़ी कांवड़: इस यात्रा में कांवड़ को हमेशा गति में रखना होता है। यदि कांवड़िया आराम करता है, सोता है तो उसकी जगह किसी दूसरे सहयोगी को कांवड़ को अपने कंधे पर लेकर खड़े रहना या चलना पड़ता है।
दंडी कांवड़: इसमें श्रद्धालु नदी से जल भरने के बाद शिव मंदिर तक की पूरी दूरी साष्टांग प्रणाम करते हुए पूरी करते हैं। इस यात्रा को पूरा करने में हफ्तों या महीनों का समय लग जाता है।

प्रसिद्ध कांवड़ यात्राएं: भारत में दो सबसे बड़ी कांवड़ यात्राएं आयोजित होती हैं। पहली हरिद्वार यात्रा, जिसमें श्रद्धालु हरिद्वार, ऋषिकेश या गौमुख से गंगाजल भरते हैं। ये श्रद्धालु वापस आकर अपने स्थानीय शिव मंदिरों में जल चढ़ाते हैं। दूसरी सुल्तानगंज से देवघर तक की यात्रा। इस यात्रा में श्रद्धालु सुल्तानगंज से उत्तरवाहिनी गंगा का जल लेते हैं और देवघर स्थित वैद्यनाथ धाम में ज्योतिर्लिंग पर जल अर्पित करते हैं। *

भूमिका / शैलेंद्र सिंह

जंगलों के नायक-रक्षक फॉरेस्ट रेंजर

जंगली जानवरों ही नहीं वन संपदा की सुरक्षा करने और उन्हें संवर्धित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका फॉरेस्ट रेंजर्स की होती है। ये किस-किस तरह की भूमिकाएं निभाते हैं, इस बारे में आपको भी जानना चाहिए।

जब भी भारत के बाघों की बढ़ती संख्या, एशियाई शेरों और काजीरंगा के गैंडों की सुरक्षा या हाथियों के संरक्षण की बात होती है, तो सुर्खियों में अकसर राष्ट्रीय उद्यान, अभ्यारण्य और सरकारी योजनाएं होती हैं। लेकिन इन सफलताओं के पीछे ऐसे हजारों चेहरे भी होते हैं, जिनका नाम शायद ही कभी सुर्खियां बनता हो। ये हैं हमारे फॉरेस्ट रेंजर और फ्रंट लाइन वन सुरक्षाकर्मी। ये वो लोग होते हैं, जो हर मौसम, हर परिस्थिति और हर खतरे के बीच जंगलों की रक्षा में दिन-रात डटे रहते हैं। यही कारण है कि 31 जुलाई को मनाया जाने वाला विश्व रेंजर दिवस केवल एक औपचारिक दिवस भर नहीं है, सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर भी है।

निभाते हैं कई भूमिकाएं: वन या फॉरेस्ट रेंजर का काम केवल जंगल में गश्त लगाना भर नहीं है, उसकी जिम्मेदारी वास्तव में किसी एक विभाग तक सीमित नहीं है। उन्हें वन्यजीवों की सुरक्षा करनी पड़ती है, अवैध शिकार पर नजर रखनी होती है, लकड़ी की तस्करी रोकनी होती है, जंगल में लगने वाली आग पर नियंत्रण पाना होता है, मानव-वन्यजीव संघर्ष की स्थिति में लोगों और जानवरों दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी होती है और कई बार घायल वन्यजीवों के बचाव अभियान में भी हिस्सा लेना पड़ता है। मतलब यह एक ऐसी नौकरी है, जिसमें हर दिन एक नहीं बल्कि कई तरह की चुनौतियों से निपटना होता है।

कठिनाइयों में निभाते दायित्व: एक वन रेंजर का दिन अकसर सूर्योदय से पहले शुरू हो जाता है। वह कई किलोमीटर तक पैदल गश्त करता है। दुर्गम पहाड़ियों पर चढ़ाई करता है। घने जंगलों में घंटों तक निगरानी करता है और रात में भी सतर्क रहना पड़ता है। यह सब उसके काम का हिस्सा है। बरसात, भीषण गर्मी या कड़ाके की ठंड, प्रकृति का कोई भी मौसम उसकी जिम्मेदारी को कम नहीं करता बल्कि कई बार उसे ऐसे इलाकों में काम करना पड़ता है, जहां मोबाइल नेटवर्क तक काम नहीं करता।

हर क्षेत्र में सक्रिय: निःसंदेह आज भारत दुनिया का सबसे ज्यादा जंगली बाघों वाला देश है। लेकिन यह उपलब्धि केवल सरकारी नीतियां बना देने भर का परिणाम नहीं है बल्कि उन वन कर्मियों की सतत मेहनत का भी नतीजा है, जो कैमरा ट्रैप की निगरानी करते हैं, जंगल में गश्त करते हैं, संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखते हैं और शिकारियों के खिलाफ कार्यवाई करते हैं। गुजरात में एशियाई शेरों की सुरक्षा का सवाल हो, असम में एक सींग वाले गैंडों का संरक्षण हो या दक्षिण भारत के हाथी गलियारों की निगरानी करनी हो, हर जगह वन रेंजर सबसे महत्वपूर्ण कड़ी होते हैं।

बढ़े हैं नए दायित्व: हाल के कुछ सालों में वन रेंजरों का कार्यक्षेत्र और भी ज्यादा व्यापक हुआ है। जलवायु परिवर्तन के कारण पूरी दुनिया के जंगलों में लगने वाली आग की घटनाएं बढ़ रही हैं, वर्षा के पैटर्न बदल रहे हैं और मानव-वन्यजीव संघर्ष के मामले भी बढ़े हैं। ऐसे में वन रेंजर अब केवल वन्यजीवों के संरक्षक भर नहीं हैं बल्कि पर्यावरणीय आपदाओं से निपटने वाले अग्रिम प्रहरी भी बन गए हैं। वे जंगलों की स्थिति का आंकलन करते हैं, जलस्रोतों की निगरानी करते हैं और स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर संरक्षण योजनाओं को लागू करते हैं। तकनीक ने इनके काम को नई दिशा दी है। आज कैमरा ट्रैप, ड्रोन, जीपीएस आधारित स्मार्ट पेट्रोलिंग, रेडियो कॉलर, सैटेलाइट मैपिंग और एआई जैसे उपकरण वन्यजीव संरक्षण में मदद कर रहे हैं। मगर ये सारी तकनीक सिर्फ सहायक हैं। अंतिम निर्णय और जोखिम उठाने का साहस केवल और केवल वन रक्षकों का ही होता है। इसलिए आज भी मौके पर त्वरित कार्यवाई वन रेंजरों की सूझबूझ और अनुभव के जरिए ही होती है।

रिस्क भी है बहुत: फॉरेस्ट रेंजर्स का काम जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही जोखिम भरा भी है। कई बार उन्हें हथियाबंद शिकारियों और वन माफिया का भी सामना करना पड़ता है। दूसरी तरफ जंगली हाथी, बाघ, तेंदुए या भालू जैसे वन्यजीवों से अचानक सामना भी जानलेवा हो सकता है। जंगल की आग, बाढ़, भू-स्खलन और विषैले जीव-जंतु भी उनकी राह में कई तरह के जानलेवा रोड़े अटकाते हैं। यह अकारण नहीं है कि दुनिया में हर वर्ष बड़ी संख्या में वन रेंजर ड्यूटी के वक्त अपनी जान गंवा देते हैं। विश्व रेंजर दिवस वास्तव में ऐसे ही बहादुर वन रक्षकों को श्रद्धांजलि देने का भी दिन है। *

एक्टिंग की दुनिया में विक्रांत मेसी का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। टीवी से शुरू हुआ विक्रांत का सफर फिल्म और वेब सीरीज तक पहुंच चुका है। हर किरदार में कुछ नया तलाशने वाले विक्रांत इन दिनों नेटफ्लिक्स की वेब सीरीज 'मुसाफिर कैफे' को लेकर चर्चा में हैं। यहां प्रस्तुत है इस वेब सीरीज और एक्टिंग करियर पर विक्रांत मेसी से हुई बातचीत के प्रमुख अंश।

लवस्टोरी बेस्ड बहुत दिलचस्प वेब सीरीज है 'मुसाफिर कैफे': विक्रांत मेसी

खास मुलाकात
आरती सक्सेना

विक्रांत मेसी ने अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत टीवी से की थी। उसके बाद विक्रांत ने फिल्मों में काम शुरू किया। उनको फिल्म '12वीं फेल' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कई वेब सीरीज में भी विक्रांत मेसी ने अलग-अलग तरह का अभिनय करके दर्शकों के बीच अपनी खास पहचान बनाई। 24 जुलाई को नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई वेब सीरीज 'मुसाफिर कैफे' में विक्रांत मेसी रोमांटिक अंदाज में नजर आ रहे हैं। साथ ही विक्रांत इस सीरीज के को-प्रोड्यूसर भी हैं। 'मुसाफिर कैफे' में उनका काम करने का अनुभव कैसा रहा? इसके अलावा अपने एक्टिंग करियर से जुड़े कई दिलचस्प सवालों के जवाब दिए विक्रांत मेसी ने।

रोमांटिक वेब सीरीज 'मुसाफिर कैफे' में आप एक्टर होने के साथ-साथ को-प्रोड्यूसर भी हैं। इस वेब सीरीज को प्रोड्यूस करने और इसमें अभिनय करने का खयाल आपके मन में कैसे आया?

एक एक्टर की हमेशा ख्वाहिश होती है कि उसे अच्छी कहानी पर काम करने का या अभिनय करने का मौका मिले। मेरी भी हमेशा कोशिश रहती है कि मैं जो भी काम करूं या जो भी किरदार निभाऊं, उसमें मुझे कुछ अलग कुछ नया करने का मौका मिले। ऐसे में जब मुझे 'मुसाफिर कैफे' वेब सीरीज का ऑफर आया तो मुझे इसकी कहानी अच्छी लगी, लिहाजा मैंने इस वेब सीरीज में एक्टिंग करने के साथ-साथ बतौर सह निर्माता भी नई शुरुआत की। चूंकि यह सीरीज नेटफ्लिक्स की है और मैं नेटफ्लिक्स के साथ पहले भी काफी काम कर चुका हूं, इसलिए मुझे लगा कि मैं 'मुसाफिर कैफे' प्रोड्यूस भी करूं। यह लवस्टोरी पर बेस्ड बहुत ही दिलचस्प सीरीज है, जिसमें पहाड़ों में रोमांस दिखाया गया है।

'मुसाफिर कैफे' के एक सीन में को-एक्ट्रेस के साथ विक्रांत मेसी

'मुसाफिर कैफे' में रोमांस को दो तरीके से दिखाया गया है, जिसमें एक तरफ जवानी की शुरुआत के दौरान का प्यार है, जो हमें प्यार करना सिखाता है और दूसरी तरफ एक ऐसा भी प्यार है, जो सच्चे प्यार की अहमियत समझाता है। इन दोनों में से कौन-सा प्यार आपको आकर्षित करता है?

मेरे खयाल में अगर जिंदगी का तजुर्बा हासिल करना है तो दोनों प्यार का अनुभव पाना जरूरी है। एक बार प्यार में दिल टूटने के बावजूद अगर आपको दूसरा प्यार मिल जाता है तो इसके बाद आपको सच्चे प्यार की परख होती है। और यह फर्क तभी पता चलता है, जब आप दोनों प्यार की अच्छाई-बुराई का अनुभव करते हैं। जवानी में होने वाला प्यार आपको खुशी देता है, तो एक उम्र के बाद मैच्योरिटी में मिला प्यार आपको सुकून देता है। यही इस सीरीज में दिखाया गया है। इस सीरीज की कहानी दिव्य प्रकाश दुबे की नॉवेल पर बेस्ड है।

इस सीरीज में एक्टिंग के साथ-साथ को-प्रोड्यूसर की जिम्मेदारी संभालना आपके लिए कितना मुश्किल या कितना आसान रहा?

सच कहूं तो मुझे तकनीकी पक्ष की ज्यादा जानकारी नहीं है। लेकिन शरण्या राजगोपाल जैसी सक्षम लेखिका और टेरीबली टिनी टेल्स जैसे बेहतरीन प्रोडक्शन पार्टनर की वजह से बतौर निर्माता मेरे लिए काम करना आसान हो गया। इनके साथ काम करने के बाद मुझे प्रोडक्शन या तकनीकी पहलुओं पर ध्यान देने की जरूरत नहीं पड़ी। अगर दमदार कहानी हो, अच्छी स्क्रिप्ट और पूरी तैयारी हो तो आपको सेट पर जाकर काम करना आसान हो जाता है।

आपने छोटे पर्दे यानी टीवी से अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत करके बड़े पर्दे पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई। '12वीं फेल' के लिए तो आपको राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। अपने इस सफर को आप कैसे देखते हैं?

राष्ट्रीय पुरस्कार पाना एक कलाकार के लिए बहुत बड़े सम्मान की बात होती है। जब मुझे पता चला कि मुझे '12वीं फेल' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है, तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। बाकी जहां तक टीवी से फिल्म और फिल्म से वेब सीरीज तक अभिनय सफर की बात है तो वह मुश्किल भी रहा और मजेदार भी, क्योंकि आपको जब कड़ी मेहनत करने के बाद सफलता का मजा चखने का मौका मिलता है तो एक अंदरूनी खुशी होती है। जिसे बयां नहीं किया जा सकता है।

काम के प्रति आपका उत्साह, आपकी लगन और ऊर्जा आज भी बरकरार है। आपके प्रेरणा स्रोत कौन हैं?

एक एक्टर कभी भी अपने काम से संतुष्ट नहीं होता और उसे ऐसा लगता है कि अभी बहुत कुछ करना बाकी है। यही जुनून उस एक्टर के लिए प्रेरणा स्रोत होता है। जब मुझे राष्ट्रीय पुरस्कार मिला तो कई लोगों ने मुझे यही सवाल किया, 'आपका लक्ष्य तो पूरा हो गया, क्या आगे भी आप ऐसे ही काम के प्रति प्रोत्साहित रहेंगे?' ऐसे में मेरा यही मानना है पुरस्कार या सम्मान यात्रा के पड़ाव हैं। असली लक्ष्य है, अच्छी कहानी के जरिए आम लोगों के बीच सच में बदलाव करना। *